अनुक्रमणिका

विषय-सूची	पृष्ठ-संख्या
१. 'श्रीराधिका' ही परमाराध्या	०३
२. विश्व की समस्त समस्याओं का निदान - एकमात्र श्रीभगवन्नाम	०६
३. 'श्रीकृष्ण-संकीर्तन' से सुमंगलमयी सृष्टि	१०
४. 'दीदीजी गुरुकुल, मानमंदिर' के बाल-विद्यार्थियों द्वारा 'श्रीहरिनाम-प्रचार' अभियान	१५
५. बालाराधिकाओं द्वारा श्रीकृष्णनाम का संप्रवाह	१६
६. भक्ति का स्वरूप 'विशुद्ध भावना'	१८
७. गुरु-निष्ठा का सच्चा स्वरूप	२१
८. भागवत में 'श्रीराधा तत्त्व'	२३
९. श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान द्वारा ब्रज-क्षेत्र में हरिनाम-प्रचार की सूची	३१

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो |

न तेरे सहारे न मेरे सहारे, उसी के सहारे उसी के सहारे |
मेरी कश्तिये उम्र का पूछना क्या, चली जा रही है कनारे कनारे ||

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल

प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,
गह्वरवन बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :ms@maanmandir.org)
mob. : 9927338666, 9837679558

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान -

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले |"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रेमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गौ सेवा प्रकल्प को दान कर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें | हिन्दू शास्त्रों में अंश मात्र गौ सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है |

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

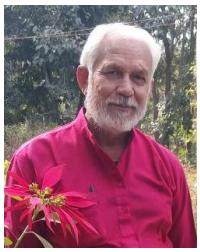

प्रकाशकीय

कलियुग में यदि कोई सर्वोत्कृष्ट साधन है भगवत्प्राप्ति का तो वह है **'श्रीभगवन्नाम'** |

कलियुग केवल नाम अधारा | सुमिर-सुमिर नर उतरहिं पारा ||

यज्ञ, दान, तप, स्वाध्यायादि अनेक साधन शास्त्र-निर्दिष्ट हैं परन्तु सरलतम साधन और सहज सुलभ श्रीहरि का नाम ही है | मनुष्य शरीर यद्यपि देवदुर्लभ है परन्तु भगवत्कृपा से हमें वह मिला है जिसका एकमात्र उपयोग नामगान ही है ताकि सृष्टि के जड़-चेतन समस्त जीवों का कल्याण हो सके | पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े अथवा वृक्षादि जो बोल नहीं सकते उनका कल्याण कैसे होगा ? सृष्टि में भगवान् समय-समय पर महापुरुषों के रूप में अवतरित होते हैं और 'नाम-सेवा' से सर्वजनकल्याण किया करते हैं | हरिदासजी का नाम बड़ी निष्ठा से लिया जाता है जिन्होंने २२-२२ बाजारों में कोड़े खा-खा कर नाम-प्रचार किया | उसी तरह ब्रजवसुंधरा में श्रीधाम बरसाना के परम विरक्त संत पूज्य श्रीरमेशबाबाजी वर्तमान में ऐसा लगता है कि सम्भवतया ब्रजरक्षा व नाम-प्रचार के लिए ही अवतरित हुए हैं | बाबा ने न केवल ब्रज के वन-सरोवर, दिव्य पर्वत, गौमाता के संरक्षण-सम्वर्द्धन का ही कार्य नहीं किया अपितु दुनिया में भगवन्नाम-प्रचार की अलख जगाई | ४० हजार से अधिक गाँवों में 'संकीर्तन प्रभात फेरियाँ' प्रारम्भ कराईं | बाबा महाराज यह जानते हैं –

पशु-पक्षी कीट-भृंग बोलि ते न पारे | शुनि लेई हरिनाम तारा सब तरे ||

ब्रजागमन से निरंतर बाबा का प्रयास यही रहा कि जगत का कल्याण भगवान् के नाम से ही होगा | मानमन्दिर; जहाँ वे विराजते हैं वहाँ तो अखंड हरिनाम की सेवा होती ही रहती है, साथ में अन्य कई स्थलों पर आपकी कृपा से भगवन्नाम अखंड रूप से चल रहा है | ब्रजभूमि के समस्त १४०० गाँवों में हरिनाम प्रभातफेरी बाबा ने चलवाई परन्तु कलिप्रवाह से कहीं-कहीं बंद भी होने लगी तो उन्होंने समय-समय पर संस्थान की टीम तैयार कर गाँव-गाँव में नाम की अलख जगाई | अभी वर्तमान में मानमन्दिर के २५ संतों की एक टीम नित्य बीसों गाँवों में पहुँचकर ब्रजवासियों को जागृत कर हरिनाम फेरी प्रारम्भ करा रही है | विषम परिस्थितियों में भी सभी घर-घर जाकर **'नाम-दान'** की भिक्षा माँगते हैं और गाँव में जागृति आ जाती है | सभी संत पूर्णतया निःस्पृह होकर कार्य करते हैं, किसी से कुछ भी गृहण नहीं करते बल्कि उल्टे आवश्यकतानुसार माईक ढोलक भी प्रदान करते हैं | भिक्षा माँगकर प्रसाद पा लेते हैं और किसी भी गाँव में रात्रि-निवास कर लेते हैं | नाम-सेवा के अतिरिक्त समाज में प्रेम-मैत्री-सद्भाव का वातावरण संतों के प्रयास से तैयार हो रहा है | यह सब देखकर बाबा ने दिनाँक २८/०७/१९ को उत्साहवर्द्धन हेतु उन्हें सम्मानित किया, यद्यपि संत किसी सम्मान पाने के जिज्ञासु नहीं हैं, फिर आशीर्वादस्वरूप बाबा के वाण्यामृत से अपने को कृतार्थ मानकर मात्र दो माह में सम्पूर्ण ब्रज के सभी गाँवों में प्रभातफेरी पुनः संचालित कराने का सभी ने संकल्प लिया; यह सम्पूर्ण विषय 'मासिक पत्रिका' में प्रकाशित भी इसी आशय से किया जा रहा है कि हमारे पाठकजन अपने आस-पास 'श्रीभगवन्नाम प्रभात फेरियाँ' प्रारम्भ कराएँ | जीव को निर्भय करने का यह सबसे सरल सुलभ साधन है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ॥ (श्रीमद्भागवतजी- ३/७/४१)

राधाकान्त शास्त्री

व्यवस्थापक, मान मन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

'श्रीराधिका' ही परमाराध्या

श्रीबाबामहाराज के राधासुधानिधि-सत्संग से संकलित
संकलनकर्त्री एवं लेखिका – बाल व्यासाचार्या साध्वी श्रीजी, मानमन्दिर, बरसाना

महाभाग श्रीरशंगजी द्वारा बसाए गए श्रीजी की नित्य क्रीड़ास्थली '**बरसाने**' ग्राम का नाम 'वरषाणा' भी है क्योंकि श्रीराधिका की जन्मभूमि होने से यहाँ नित्य-निरन्तर प्रेममयी भक्तिरस की वर्षा होती रहती है |

"जय बरसानो गाँव जय जय श्री राधे |
राधारानी को गाँव जय जय श्री राधे ||"

रशंगजी के ही वंश में उत्पन्न हुए श्रीवृषभानुजी की पुत्री के रूप में श्रीराधारानी का आविर्भाव हुआ |

"भादों सुदी अष्टमी तिथि भयी,
कीरति के कन्या सुखरासी ||"

भाद्रमास की अष्टमी तिथि को वृषभानुजी की धर्मपत्नी रानी कीर्तिजी से एक दिव्य कन्या का प्राकट्य हुआ | इस कन्या के कारण वृषभानुजी का यश त्रिलोकी में चहुँ ओर फैला | जैसे - वृषराशि पर जब सूर्य आता है तो उसका तेज असह्य होता है, उसी तरह श्रीराधारानी के पिता का नाम 'वृषभानु' इसलिए पड़ा क्योंकि इनका यश अखिल ब्रह्मांड में प्रसरित हुआ |

"श्रीवृषभानु महीपति को यश
फैल रह्यो चहुँ ओर उजसि |"
"राधा राधा नाम कहैं,
नाम लली को बाधा नासी |"

'राधा' नाम उच्चारण करने पर करोड़ों जन्मों की बाधाएँ नष्ट हो जाती हैं, क्योंकि 'राध' धातु हिंसायाम्, 'राध' धातु के कई अर्थ हैं, जिस अर्थ में इसका तात्पर्य 'हिंसा' से है, उसमें समस्त पाप, बाधाएँ और संकट समाप्त हो जाते हैं |

'श्रीजी' का धात्वर्थ है – 'श्री' श्रयणे धातु होती है, सहारा लेने के अर्थ में –

'सर्वैः जनाः आश्रियते इति श्री, सर्वैः आश्रयणीयो भवति यया' | 'शृणाति हिनस्तिभक्तदोषान् इति श्री' | भक्तों के अन्दर जो दोष होते हैं उनको श्रीराधारानी ही समाप्त करती हैं, इसलिए उनको 'श्री' कहा जाता है; इसका प्रमाण है - श्रीराधासुधानिधि में श्लोक - १८७) रसिकों ने कहा है –

"किशोरी जू के चरण महासुखदाई |
जिनहि निरखि लाल भये प्रीतम,
करति केलि मन भाई ||"

श्रीजी के चरण-दर्शन (आश्रय) से श्रीकृष्ण अतिशय प्रेष्ठ बन गये | राधिकोपनिषद में लिखा है – **'कृष्णेन आराध्यते इति राधा'** जो कृष्ण से आराधित होती हैं वह 'राधा' हैं | **'कृष्णं समाराधयति इति राधिका'** जो कृष्ण की आराधना करती हैं वे हैं **'राधिका'** |

श्रीश्यामसुन्दर भी नित्य-निरन्तर श्रीजी के लीला-रस में निमग्न रहते हुए 'बरसाने, गह्वरवन' की ही याद करते हैं | यहाँ तक कि श्रीराधासुधानिधिकार ने श्रीराधाप्रेम की परम प्रगाढ़ता के कारण अपनी बहुत दीनता दिखाते हुए ग्रन्थ के प्रारम्भिक श्लोक में न तो श्रीराधारानी, न श्रीकृष्ण को, किसी को भी प्रणाम नहीं किया, यह एक बहुत विचित्र बात थी |

यस्याः कदापि वसनाञ्चलखेलनोत्थ
धन्यातिधन्यपवनेन कृतार्थमानी |
योगीन्द्रदुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि तस्या नमोऽस्तु
वृषभानुभुवो दिशेऽपि || (श्रीराधासुधानिधि -१)

ग्रंथकार का भाव है कि हम तो श्रीजी को प्रणाम करने योग्य ही नहीं हैं, उन वृन्दावनेश्वरी को हम जैसे तुच्छ जीव कैसे प्रणाम कर सकते हैं, जिसमें 'यस्याः' कहकर श्रीराधिका को संबोधित किया, उनका सुदैन्यमय गूढतम भाव यह है कि स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण भी श्रीजी के प्रेमातिरेक में भाव-विभोर होकर पूरा नाम नहीं ले पाते हैं, उन लाड़िलीजी का नाम हम कैसे लें ? इसलिए मंगलाचरण में नाम नहीं लिया और 'सर्वनाम' से इष्टदेव

को सुसंबोधित करते हुए सर्वप्रथम परममंगलमय 'श्रीबरसाने' धाम को प्रणाम किया है |

श्रीशुकमहाप्रभु ने भी 'सर्वनाम' स्पष्ट रूप से साक्षात् गुरुस्वरूपा परमप्रेममयीमहादेवी 'श्रीराधा' का नाम नहीं लिया; से ही श्रीमद्भागवत में राधालीला आई है,

वस्तुतः श्रीमद्भागवत में जैसा राधाचरित्र का वर्णन है वैसा अन्य किसी ग्रन्थ में नहीं है, वे लोग बहुत ही नासमझ हैं जो कहते हैं कि श्रीमद्भागवत में 'राधा नाम' नहीं है | जैसे कोई पुत्र अपने माता या पिता के पास जाता है तो उनका नाम नहीं लेता है | गुरुदेव के पास जायेंगे तो भगवन् कहेंगे, गुरुजी का नाम लेकर कोई उन्हें संबोधित नहीं करता, यह एक प्रेम की विधा है | यदि कोई यह प्रश्न पूछे कि ग्रन्थ के बीच में तो आपने कई बार 'श्रीजी' का नाम ले लिया तो इसका उत्तर अन्त में कहते हैं –

क्वासौ राधा निगमपदवीदूरगा कुत्र चासौ
कृष्णस्तस्याः कुचमुकुलयोरन्तरैकान्तवासः |
क्वाहं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्हकर्मा
यत् तन् नाम स्फुरति महिमा ह्येष वृन्दावनस्य ||

(राधासुधानिधि-२६०)

श्रीराधारानी की ऐसी अनंत महिमा है कि जहाँ वेद भी नहीं पहुँच सकते हैं और कृष्ण के लिए कहते हैं – "कृष्णस्तस्याः कुचमुकुलयोरन्तरैकान्तवासः |"कृष्ण तो एक भौंरे थे जो श्रीराधिका रूपी कमल के भीतर सदा के लिए बंद हो गये, सृष्टि-प्रपंच को छोड़कर उन्होंने एकांतवास ले लिया | फिर "क्वाहं तुच्छः परममधमः प्राण्यहो गर्हकर्मा" कहाँ मैं तुच्छ परम अधम प्राणी राधानाम लेने के योग्य हूँ ? मैंने जो श्रीजी का नाम लिया उसका कारण है – **"यत् तन् नाम स्फुरति महिमा ह्येष वृन्दावनस्य ||"** इस ब्रजरज में आने वाला जो भी व्यक्ति है, उसे यह रजरानी अधिकार दे देती हैं कि 'जा तू, राधा-राधा कह' ये यहाँ की मिट्टी का प्रताप है; इस ब्रजभूमि में जो भी आता है, वह सहज में ही राधे-राधे कहने लगता है | इसलिए ब्रजवासीजन कहते हैं कि यहाँ आकर भी जिसने राधा-राधा नहीं कहा, राधा नाम नहीं जाना, उससे ज्यादा अभागा कोई नहीं है, ब्रजवासी गाते हैं – **"जो बरसाने (वृन्दावन) में आयो,**
जानै राधा नाम न गायो |
वाके जीवन को धिक्कार रटे जा राधे-राधे ||"

ऐसी असीम महामहिमान्वित श्रीराधिका के अंचल की सुगन्धित वायु को पाकर अनंत कोटि ब्रह्माण्ड नायक श्यामसुन्दर भी धन्यातिधन्य (परमकृतार्थ) हो जाते हैं |

ग्रैवेयोज्ज्वलकम्बुकण्ठिमृदुदोर्वल्लीचलत्कङ्कणे |
वीक्षे पट्टदुकूलवासिनि रणन्मञ्जीरपादाम्बुजे ||

(श्रीराधासुधानिधि -१०८)

लाड़िलीजी का ऐसा सुन्दर दुकूल (अंचल) है, जिसकी श्रीसुगंध पाने के लिए श्यामसुन्दर निरन्तर लालायित रहते हैं, जिधर से श्रीजी निकलती हैं, पादाम्बुज-मणि-मंजीर के छम-छम की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ने लगती है | रसिकों ने बताया है कि श्रीजी के चरणों के नूपुरों से शब्दब्रह्म का प्रकाश होता है –

"श्रीराधा पद-पद्म में, नूपुर कलरव होय |"

नूपुर-ध्वनि के आगे वंशी भी चुप हो जाती है |

पादाङ्गुलीनिहितदृष्टिमपत्रपिष्णुं दूरादुदीक्ष्य
रसिकेन्द्रमुखेन्दुबिम्बम् |
वीक्षे चलत्पदगतिं चरिताभिरामां झङ्कारनूपुरवतीं
बत कर्हि राधाम् ||

(श्रीराधासुधानिधि -१५)

"झङ्कारनूपुरवतीं बत कर्हि राधाम्" जब वह चलती हैं तो ऐसी अद्भुत झनकार ध्वनि उत्पन्न होती है कि जिसके आगे शब्द-ब्रह्म, अनेक मंत्र, वीणा, वंशी आदि सब उस सुंदरता-मधुरता के आगे शान्त हो जाते हैं | जिस समय श्रीराधारानी गाती हैं तो उस गान की सुमधुरता के आगे श्रीकृष्ण भी चुप हो जाते हैं |

भावुकजन कहते हैं कि बिना राधिकारानी के जो श्रीकृष्ण की उपासना करता है, उसे तो अमावस्या के चन्द्रमा का उपासक समझो | वस्तुतः श्रीकृष्ण तत्त्व की प्रकाशिका वृषभानुजा हैं |

राधादास्यमपास्य यः प्रयतते गोविन्दसङ्गाशया सोऽयं पूर्णसुधारुचेः परिचयं राकां विना काङ्क्षति | किं च श्यामरतिप्रवाहलहरीबीजं न मे तां विदुः ते प्राप्यापि महामृताम्बुधिमहो बिन्दुं परं प्राप्नुयुः ||

(श्रीराधासुधानिधि - ७९)

अवर्णनीय गुणसम्पन्न परब्रह्म श्रीकृष्ण आत्माराम, आत्मरत होते हुए भी श्रीजी की आराधना करके रस-सिद्धि करते हैं, क्योंकि **"इत्थं भूतगुणा राधिका"** श्रीराधिका में ऐसे असाम्यातिशय विलक्षण गुण हैं –

निरस्तसाम्यातिशयेन राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्यते नमः | (श्रीमद्भागवतजी २/४/१४)

आत्मारामस्य कृष्णस्य ध्रुवमात्मास्ति राधिका |

(स्कन्दपुराण, भागवतमाहात्म्य – २/११)

श्रीराधारानी में ऐसे ही अनन्त दिव्यातिदिव्य गुण हैं कि आत्माराम होते हुए भी श्रीकृष्ण को उनका आश्रय लेकर रास-विहार-लीला किया |

एक युगलरसमयी लीला की झलक है –

"संग ही चले डगर के डगर के |"

सुन्दर कुंज गली है, बीच में सखियाँ हैं और उनके मध्य में राधारानी हैं तथा श्यामसुन्दर मार्ग के किनारे-किनारे श्रीराधिका का मुख-दर्शन कर लट्टू होते हुए चल रहे हैं, जहाँ श्रीजी रुकती हैं वहाँ रुकते हैं, जहाँ चल देती हैं वहाँ स्वयं भी चल देते हैं। खड़ी हो गईं तो खड़े हो गए, चल पड़ीं तो चल पड़े, श्रीजी किसी सखी से बात करने लगीं तो श्यामसुन्दर खड़े होकर उनको देखने लगे। सखी ने श्रीजी से कहा – लाड़िली जी ! जरा-सा बायीं ओर मुड़के देखो। किशोरीजी देख नहीं रही हैं, जानती हैं, क्या देखें, वही होंगे। जान-बूझकर नहीं देख रही हैं, यह उनकी अदा है। नायिका की अदा को संस्कृत में 'विभ्रम' कहते हैं। राधाकृपाकटाक्ष स्तोत्र में भी वर्णन आता है –

अनङ्ग रङ्ग मङ्गल प्रसङ्ग भङ्गुर भ्रुवाम् |
सविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्त बाणपातनैः ||

'सविभ्रमम्' – ये अदा है; रूपगर्वीली, गुण गर्वीली श्रीराधारानी की प्रत्येक क्रिया अदामय है।

जैसे-जैसे श्रीजी अपनी अदा दिखाती हैं तो श्यामसुन्दर की ओर पीठ कर लेती हैं कि मैं उन्हें नहीं देखूँगी, वैसे-वैसे श्रीकृष्ण और अधिक उनके वश में हो रहे हैं। श्रीकृष्ण का अंग-अंग वश में हो गया है, न हिल रहे हैं, न डुल रहे हैं। **"सूर श्याम प्यारी के वश भये,**
रोम-रोम रस भरके-भरके ||"

श्रीकृष्ण के रोम-रोम में राधा-रस में व्याप्त हो गया।

श्रीराधारानी के कारण ही सम्पन्न हुईं रसमयी लीलाओं का आधार अवतरितधाम का दिव्य स्वरूप आराधना से ही दिखाई पड़ता है | 'गह्वरवन' श्रीजी की अन्तरंग लीलास्थली है, यहाँ नित्य रसमयी लीलाएँ होती हैं, जिन लीलाओं में प्रवेश पाने व सेवाराधन हेतु स्वयं श्यामसुन्दर भी सखी-वेश में आकर श्रीजी की सखियों से करबद्ध याचना करते हैं –

गह्वरवन के वास की, आस करैं सिव सेष |
इहाँ की महिमा कौन कहै, जहाँ स्याम धरैं सखी वेष ||

श्रीराधिकारानी ने स्वयं इस वन को बनाया है, ये ऐसा प्यारा, सलौना वन है कि यहाँ आते ही श्रीश्यामसुन्दर भी मोहित हो जाते हैं |

यत्र गहवरकं नाम वनं द्वन्द्व मनोहरम् |
नित्य केलि विलासेन निर्मितं राधया स्वयम् ||

श्रीयुगलसरकार का परमरमणीय 'श्रीगह्वरवन' है, जिसके दर्शनमात्र से ही समस्त मनोविकार (राग-द्वेष आदि द्वंद्व) समूलतः सुदूर हो जाते हैं; जिसे स्वयं श्रीराधिकारानी ने नित्यलीलाविलास के लिए अपने हाथों से बनाया है |

"श्रीभगवल्लीलायें व सेवाराधन केवल आराधना-शक्ति से ही सुसम्पन्न होता है, अतः प्रेमाराधना (नृत्य-गान) ही परमशक्ति है जो साक्षात् श्रीजी का ही स्वरूप है, जिसकी उपासना स्वयं रसिकशेखर श्यामसुन्दर करते हैं, इसलिए मानगढ़ उसी आराधना-शक्ति श्रीराधारानी का मानभवन है, जहाँ आज भी उसी रसमयी आराधना का स्वरूप साक्षात् दृष्टिगोचर होता है |"

विश्व की समस्त समस्याओं का निदान - एकमात्र श्रीभगवन्नाम

संकलनकर्त्री एवं लेखिका –दीदीजी गुरुकुल की छात्रा बालसाध्वी रासप्रियाजी, मानमन्दिर, बरसाना

बहुत से लोग प्रश्न करते हैं कि दिन-रात कलियुग का प्रभाव बढ़ता जा रहा है, ऐसी स्थिति में संसार का कल्याण कैसे होगा ? ये बात सत्य है कि सारे विश्व में आज बेरोजगारी, कलह, युद्ध, आतंकवाद आदि समस्यायें बढ़ रही हैं; इसका मुख्य कारण बहिर्मुखता (नास्तिकता) ही है। हमारे देश में ऐसे-ऐसे राजा हुए जिन्होंने सत्ययुग आदि में करोड़ों वर्ष राज्य किया; सुख-शान्ति बनी रही, सदा सुकाल की स्थिति रही। अब अकाल की ओर विश्व बढ़ रहा है, जैसे – सारे संसार में जल-संकट बढ़ता जा रहा है। नदियों में, सरोवरों में, कूपों में, खेतों के नलकूपों में पानी घटता जा रहा है; इसी तरह से घटता रहा तो कुछ दिनों में अकाल की स्थिति निश्चित होगी। रामायण में यह भविष्यवाणी पहले ही हो चुकी है –

कलि बारहि बार दुकाल परै।
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै॥

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड- १०१)

शासक लोग घोटाला करेंगे। प्रजा को लूटेंगे –

नृप पाप परायन धर्म नहीं।
करि दंड बिडंब प्रजा नितहीं॥

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड- १०१)

देश की और विश्व की इन समस्त समस्याओं का निराकरण शास्त्रों में एक ही बताया गया है –

तस्मात् सङ्कीर्तनं विष्णोर्जगन्मङ्गलमंहसाम्॥

(श्रीमद्भागवतजी ६/३/३१)

अर्थ- भगवन्नाम-संकीर्तन किया जाय, इसी से संसार का कल्याण होगा।

भगवन्नाम से ही हुआ भारतवर्ष स्वतन्त्र

अधिकांश लोग इस बात को नहीं जानते होंगे कि भारत देश स्वतन्त्र भगवन्नाम-कीर्तन से ही हुआ था। सन् १९२९ में महात्मा गाँधी और सरदार वल्लभभाई पटेल ब्रजभूमि 'गिरि-गोवर्धन' में भजन-साधन में लगे हुए संत श्री पं. रामकृष्ण बाबा के पास आये थे, उस समय वहाँ परमपूज्य संत श्री प्रियाशरण जी महाराज भी बैठे हुए थे; पण्डित बाबा से गाँधी जी ने प्रश्न किया कि सन् १८५७ के पहले से भारत-स्वतन्त्रता का आन्दोलन चल रहा है परन्तु अनवरत् प्रयास के बाद भी अभी तक सफलता क्यों नहीं दिखाई देती ?" पंडित बाबा का उत्तर था – "बिना भगवन्नाम-संकीर्तन के सफलता संभव नहीं है।" यह संत-वचन गाँधी जी को आत्मस्थ हो गये और उन्होंने जाकर "रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम" कीर्तन आरम्भ किया। सन् १९४७ में स्वतन्त्रता-आन्दोलन की सफलता सर्वसमक्ष हो गयी।

सबसे बड़ा बल भगवन्नाम

गौरांग महाप्रभु का प्रेमावातार था, उन्होंने ऐसी लड़ाई लड़ी कि जिसे समझना बहुत कठिन है। सच्चे साधु उसी लड़ाई को लड़ते हैं जैसे कि रामायण में कहा गया है – **नाम कामतरु काल कराला।**
सुमिरत समन सकल जग जाला॥

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड - २७)

अर्थात् कलियुग में अनेक प्रकार के पाप, दुराचार बढ़ते हैं, उनसे लड़ने के लिए सैन्य-शक्ति (military - power) या आणविक शक्ति (atomic power) काम नहीं देगी। उसको जीतने के लिए भगवान् का नाम ही काम देगा। महाप्रभु जी ने भगवन्नाम संसार को दिया, उससे कलियुग की शक्ति क्षीण हुई। कलियुग के दोषों को जीतने के लिए- ऐटम बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रान बम आदि सब फेल हैं इसलिए उन्होंने भगवन्नाम दिया। सभी संतों ने कलियुग में नाम देने का प्रयास किया –

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

कलियुग में केवल हरिनाम, हरिनाम और हरिनाम से ही उद्धार हो सकता है। हरिनाम के अलावा इस कलियुग में उद्धार का अन्य कोई भी उपाय नहीं है ! नहीं है ! नहीं है। भगवन्नाम से ही विश्व की शान्ति, विश्व का कल्याण,

समाज का सुधार हो सकता है। जैसे कालकूट जहर फैला, सारा संसार उसमें जलने लगा, उस जहर को नाम के प्रभाव से शिवजी ने पी लिया –

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड-१९)

एक बार मानमंदिर से प्रतिवर्ष संचालित श्रीराधारानी ब्रज-यात्रा में महामारी फैल गयी थी, उस समय पूज्य बाबा महाराज ने यह पद गाया और सभी यात्रियों से कहा कि आप लोग मेरे साथ आधे घंटे तक राधा नाम कीर्तन करो और फिर राधा नाम की कृपा से सभी बीमार लोग पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जायेंगे –

आधो नाम तारिहैं श्रीराधा।
जुग अक्षर की महिमा को कहे, गावत वेद पुरान अगाधा॥
'रा' के कहे रोग सब मिटिहैं, 'धा' के कहे मिटै भव बाधा।
'अलि किशोरी' नाम रटत नित, लागी रहत समाधा॥

श्रीबाबामहाराज के कहने से सभी यात्रियों ने आधे घंटे तक राधा नाम का कीर्तन किया और उसका यह अलौकिक चमत्कार हुआ कि सभी बीमार यात्री उसी समय से ठीक होने लगे। नाम में अनन्त शक्ति है, एक नाम ही जीव का कल्याण कर सकता है परन्तु हम लोग नाम के बदले में लौकिक वस्तुयें- देहसुख, प्रतिष्ठा, पैसा आदि चाहते हैं। हमें भगवान् के नाम से प्रेम नहीं है, पैसे से प्रेम है, इसलिए उसका यथार्थ फल (भगवद्-प्रेम) नहीं मिल पाता है। हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से कहा था –

क्रुद्धस्य यस्य कम्पन्ते त्रयो लोकाः सहेश्वराः।
तस्य मेऽभीतवन्मूढ शासनं किम्बलोऽत्यगाः॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/८/७)

मेरे सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता। ब्रह्मा, शंकर आदि सब मेरे भय से काँपते हैं और बड़ा आश्चर्य है कि तू एक छोटा-सा लड़का मुझसे डर नहीं रहा है, तेरे पास क्या ताकत है ? प्रह्लादजी ने कहा –

न केवलं मे भवतश्च राजन् स वै बलं बलिनां चापरेषाम्।
परेऽवरेऽमी स्थिरजङ्गमा ये ब्रह्मादयो येन वशं प्रणीताः॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/८/८)

राजन्! ब्रह्मा से लेकर तिनके तक, सब छोटे-बड़े चर-अचर जीवों को भगवान् ने ही अपने वश में कर रखा है, न केवल मेरे और आपके, बल्कि संसार के समस्त बलवानों के बल भी केवल वही भगवान् हैं। किसी मनुष्य के पास कोई शक्ति नहीं हो सकती, न पैसे वाले के पास, न मन्त्रियों के पास। भक्त किसी जीव की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। बेचारे तुच्छ जीव में क्या बल हो सकता है ;वह क्या देश का कल्याण करेगा? हिन्दुस्तान हजारों साल गुलाम रहा फिर भी यहाँ की संस्कृति सुरक्षित रही, यह केवल भगवान् के नाम के प्रभाव से हुआ; संतों ने अवतरित होकर भगवन्नाम के बल से हिन्दुस्तान को बचाया। **'अन्ते नारायणस्मृतिः'** यह जीवन भगवान् को अर्पण कर दो; भगवान् तो मिले नहीं लेकिन भगवान् से भी बड़ी एक चीज मिल गयी है, वह क्या है ? वह है – 'भगवान् का नाम'

'कहउँ नामु बड़ राम तें निज बिचार अनुसार।'

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड- २३)

इस विश्वास के साथ कीर्तन करना चाहिए कि भगवान् से भी बड़ा उनका नाम है। भगवान् ने तो अपने लीलाकाल में एक ही नारी अहिल्या का उद्धार किया; परन्तु भगवान् के नाम ने आज तक न जाने कितनों का उद्धार किया। भगवान् ने कृपा करके हमको मनुष्य शरीर दिया, जिससे हम उनके नाम को गाकर इस भयानक भवसागर से पार चले जाएं; अगर हम मक्खी-मच्छर, गधा, कुत्ता बने होते तो क्या भगवान् का नाम ले सकते थे अर्थात् नहीं ले सकते थे। यह हम पर भगवान् की असीम कृपा है कि हमें मनुष्य बनाया और मनुष्य बनकर भी अगर हम भगवान् का नाम कीर्तन नहीं करते हैं तो हम गधे-कुत्तों से भी ज्यादा गिरे हुए हैं –

जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ॥

(श्रीरामचरितमानसजी, उत्तरकाण्ड- ४४)

जीवन भर भगवान् का नाम इसीलिए लिया जाता है ताकि अन्तिम समय में भगवान् की याद बनी रहे। अगर मरते समय भगवान् की याद आ जाय तो निश्चित

भगवान् मिलते हैं परन्तु अन्तिम समय में भगवान् की याद नहीं आती है, क्यों ? क्योंकि हम जीवन भर 'गेहरति' में फँसे रहते हैं। गेहरति क्या है ? ये हमारा परिवार, ये हमारी स्त्री, ये हमारे बेटा-बेटी, ये हमारा मकान.....आदि इससे आदमी कभी नहीं निकल पाता है। यह गेहरति कब छूटती है –

यः कर्णनाडीं पुरुषस्य यातो भवप्रदां गेहरतिं छिनत्ति ॥

(श्रीमद्भागवतजी ३/५/११)

जब भगवान् का नाम, भगवान् की कथा कान में आती है तब यह गेहरति नष्ट होती है और जब संसार में कहीं भी आसक्ति नहीं रहती है तो भवसागर अपने-आप कट जाता है। अगर कहीं जरा-सी भी आसक्ति है तो यह भवसागर कभी नहीं कटता। आसक्ति के कारण ही मरते समय भगवान् की याद नहीं आती।

गीताजी में भगवान् ने कहा –

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी - ८/६)

अन्त समय अर्थात् प्राण छोड़ते समय जो मनुष्य जिस-जिस भाव का चिन्तन करता है, मरने के बाद उसे वहीं जाना पड़ता है। प्रश्न हुआ मरते समय किसका चिन्तन होता है ? इसका उत्तर भगवान् दे रहे हैं 'सदा तद्भाव भावितः' जिसकी सदा (जीवनभर) तुमने भावना की, वही अन्तिम समय में याद आता है; जहाँ जीवनभर तुमने आसक्ति की उसी की याद आती है। इसीलिए मरते समय संसार में अधिकांश लोग कहते हैं – हमारे बेटे को लाओ, हमारी स्त्री को लाओ, एक बार उसका मुँह देख लें और इसी कारण उनको अधोगति की प्राप्ति होती है। अगर मनुष्य भगवान् का नाम लेता है तो प्राण छोड़ते समय उसे भगवान् याद आयेंगे। श्रीमद्भागवत में लिखा है –

यस्यावतारगुणकर्मविडम्बनानि,
नामानि येऽसुविगमे विवशा गृणन्ति।
ते नैकजन्मशमलं सहसैव हित्वा,
संयान्त्यपावृतमृतं तमजं प्रपद्ये ॥

(श्रीमद्भागवतजी- ३/९/१५)

अगर मरते समय किसी भी तरह से विवश होकर भी मन से, वाणी से, शरीर से भगवान् की याद आ जाये अथवा भगवान् का नाम स्मरण आ जाये तो इतने से ही करोड़ों जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं और भगवद्धाम की प्राप्ति होती है।

प्रभात फेरी की आवश्यकता क्यों ?

नगर-कीर्तन या कीर्तन-फेरी या प्रभात-फेरी का यह स्वरुप है कि संकीर्तन करते हुए इस प्रकार से भ्रमण किया जाए कि जिससे अधिक से अधिक लोग हरिनाम सुनें। जो जीव हरिनाम नहीं ले सकते हैं वे सभी जड़-चेतन योनि के जीव हरिनाम श्रवण से ही प्रभु को प्राप्त हो जाएँ, ऐसा लक्ष्य करके कीर्तन भ्रमण करना ही नगर-कीर्तन या प्रभात फेरी है। इसे वे ही भक्त कर सकते हैं जिनके हृदय में संसार के प्राणियों के लिए करुणा का सागर लहराता है। केवल अपनी ही मुक्ति की इच्छा रखने वाले मुमुक्षु स्वार्थी हैं। प्रह्लादजी ने नृसिंह भगवान् से यही कहा था कि मैं अकेले मुक्त नहीं होना चाहता हूँ। मुझे स्वार्थी भक्त नहीं बनना है –

नैवोद्विजे पर दुरत्ययवैतरण्या-
स्त्वद्वीर्यगायनमहामृतमग्नचित्तः।
शोचे ततो विमुखचेतस इन्द्रियार्थ,
मायासुखाय भरमुद्वहतो विमूढान् ॥

(श्रीमद्भागवतजी- ७/९/४३)

हे प्रभो ! इस भव-वैतरणी से पार उतरना दूसरे लोगों के लिए अवश्य ही कठिन है; लेकिन मुझे इसका तनिक भी भय नहीं है, क्योंकि मेरा चित्त निरन्तर आपकी लीला-कथाओं के गान में मग्न रहता है। आपका नाम, आपकी लीलाएँ स्वर्गीय अमृत को भी तिरस्कृत करने वाली परमामृत स्वरुपा हैं परन्तु मैं उन मूढ़ प्राणियों के लिए शोक कर रहा हूँ, जो आपका नाम नहीं लेते हैं, आपके गुणगान से विमुख रहकर इन्द्रियों के विषयों का मायामय झूठा सुख प्राप्त करने के लिए अपने सिर पर सारे संसार का भार ढोते रहते हैं –

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा, मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः ।
नैतान्विहाय कृपणान्विमुमुक्ष एको, नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्ये ॥

(श्रीमद्भागवतजी ७/९/४४)

हे मेरे स्वामी ! बड़े-बड़े ऋषि-मुनि तो प्रायः अपनी मुक्ति के लिए निर्जन वन में जाकर मौनव्रत धारण कर लेते हैं, वे दूसरों की भलाई के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं करते हैं। परन्तु मेरी दशा तो दूसरी ही हो रही है। मैं इन भूले हुए असहाय गरीबों को छोड़कर अकेला मुक्त नहीं होना चाहता और कोई सहाय भी नहीं दिखाई पड़ता। ऐसे भक्त भगवान् के विशेष कृपापात्र बन जाते हैं –

स्वयं समुत्तीर्य सुदुस्तरं द्युमन्,
भवार्णवं भीममदभ्रसौहृदाः ।
भवत्पदाम्भोरुहनावमत्र ते,
निधाय याताः सदनुग्रहो भवान् ॥

(श्रीमद्भागवतजी- १०/२/३१)

भगवान् के भक्त ही संसार के निष्कपट प्रेमी, सच्चे हितैषी होते हैं। वे स्वयं तो बड़े कष्ट से पार जाने योग्य भव-सागर को पार कर ही जाते हैं, किन्तु औरों के कल्याण के लिए भी वे यहाँ आपके चरण-कमलों की नौका स्थापित कर जाते हैं। नौका क्या है? भगवन्नाम, भगवल्लीलाओं का गुणगान। ऐसे भक्तों से अधिक प्यारा भक्त भगवान् का और कोई नहीं हो सकता है। गीता जी में स्वयं भगवान् ने कहा है –

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी, १८/६८, ६९)

जो मेरा प्रेमी भक्त मेरे इस गीताशास्त्र को मेरे भक्तों में कहेगा; वह निःसन्देह मुझको ही प्राप्त होगा। उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करने वाला कोई नहीं है, न ही कोई भविष्य में दूसरा होगा। अतः जो प्राणियों को भगवन्नाम का दान देता है, वह भगवान् को सबसे ज्यादा प्रिय है। गोपियों ने भी भागवत में कहा है –

'भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ।'

(श्रीमद्भागवतजी १०/३१/९)

संसार का सबसे बड़ा दानी कौन है ? धन-सम्पत्ति, अन्न-वस्त्र देने वाला सबसे बड़ा दानी नहीं है, उससे भी बड़ा दानी वह है जो भगवान् के नाम का, भगवान् की कथाओं का निष्काम भाव से दान करता है। निष्काम भाव से तात्पर्य है कि कथा-कीर्तन करने के बदले में, भगवन्नाम प्रचार करने के बदले में धन मिले, मान-सम्मान मिले – इन सब कामनाओं को छोड़कर जो चलता है, वह संसार का सबसे बड़ा दाता बन जाता है।

नन्द के भये नंदलाल, बिरज में आनन्द भयो ||
कौन ने पूजे कूआं बावड़ी, कौन ने पूजे ताल
यशोदा ने पूजे कूआं बावड़ी, नन्द जू ने पूजे ताल |
कौन के बाजे ढोल मंजीरा, कौन के नगारे पै ढाल
यशोदा के बाजै ढोल मंजीरा, नन्द जू के बाजे ढाल |
कौन ने बांटे लडुआ गूंजा, कौन ने छकाये माल
जसुदा ने बांटे लडुआ गूंजा, नन्द जू ने छकाये माल |
कौन पहराये लहंगा फरिया, कौन ने पटका माल
जसुदा पहरावे लहंगा फरिया, नन्द जू ने पटका माल |
कौन ने लुटाये गहना गुरिया, कौन ने हीरा लाल |
नांचै गावैं सब ब्रजवासी, उछर-उछर दैं ताल
दै असीस मगन सब गोपी, चिरजीवो गोपाल ||

गावो गावो री बधायो, रानी कीरति के घर आज ||
रमक झमक के चलो भानुघर सज धज के सब साज
राजा श्री वृषभानु महल में मंगल के भये काज |
गांम गांम ते आईं नारी लोगन जुरे समाज,
धौंसा की धधकार सुनो जहँ ठाड़े हैं महाराज |
बीना वैन और सारंगी महुवर हू रहे बाज,
कोउ नांचै कोउ हाँसी देवैं कौन करे ह्वां लाज |
अनहोनी भई लली सोहनी लोकन की सरताज,
जाके प्रगट होत बरसाने सबके दुख गये भाज |
नन्दगाँव ते नन्द जसोदा आये महल विराज,
कीरति जसुदा भेंटी जैसे भेंटी हैं द्वै गाज |
लाली ढिंग लाला पौढ़ायो जोरी अति छवि छाज,
पलना में खेलैं और किलकैं रूप के दोउ जहाज ||

'श्रीकृष्ण-संकीर्तन' से सुमंगलमयी सृष्टि

संकलनकर्त्री एवं लेखिका – साध्वी मीरा जी, मानमन्दिर, बरसाना

सृष्टि को परमपावन करने के लिए अनन्त श्रीयुत परम श्रद्धेय सद्गुरुदेव श्रीश्रीरमेशबाबाजीमहाराज की प्रेरणा से मानमन्दिर के सन्त, गुरुकुल के बालक और मान मन्दिर की बाल साध्वियाँ ब्रज के गाँव-गाँव में भ्रमण कर भगवन्नाम का प्रचार करने में संलग्न हैं | हाल ही में मान मन्दिर के सन्त पाँच दिनों के लिए राजस्थान के भरतपुर जिले में प्रचार हेतु गये थे, वहाँ उन्होंने नगर तहसील के २० गाँवों में नगर संकीर्तन (प्रभात फेरी) का प्रचार किया | इस बार २३ सन्त प्रचार में गये थे | इन सन्तों के प्रचार का ब्रज के गाँवों में विलक्षण प्रभाव पड़ रहा है | कई गाँवों में संतों ने लोगों से व्यसन जैसे शराब, तम्बाकू, सिगरेट-बीड़ी और जुआ (ताश) आदि को छोड़ने का अनुरोध किया तो इसे ब्रजवासियों ने तुरंत स्वीकार कर लिया और अब इन गाँवों के लोगों ने मदिरापान, जुआ आदि दुर्व्यसनों का त्याग कर दिया है और श्रद्धा के साथ प्रभातफेरी में जाने लगे हैं | ऐसे-ऐसे गाँव जहाँ पहले प्रभातफेरी में कोई नहीं जाता था, मानमन्दिर के सन्तों के प्रचार के बाद से वहाँ बहुत बड़ी संख्या में ब्रजवासी प्रभातफेरी में जाने लगे हैं | नगर तहसील के अन्तर्गत एक गाँव ऐसा था, जहाँ आर्य समाज के अनुयायियों के प्रचार से उस गाँव के सभी लोग ब्रजवासी होते हुए भी अपनी ब्रज-संस्कृति, राधाकृष्ण की भक्ति और संकीर्तन को छोड़ बैठे थे, मूर्तिपूजा नहीं करते थे किन्तु मानमन्दिर के सन्त जब इस गाँव में पहुँचे तो उनके सशक्त उद्बोधन का गाँववासियों पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे आर्यसमाज की परम्परा का त्यागकर पुनः सनातन धर्म के सिद्धांतो का पालन करते हुए अपनी ब्रज-संस्कृति में लौट आये हैं और बहुत बड़ी संख्या में वे प्रतिदिन प्रभातफेरी में जाने लगे हैं, राधाकृष्ण की भक्ति करने लगे हैं और संकीर्तन में उत्साह के साथ नृत्य भी करते हैं | इस बार वर्षाऋतु होने पर भी ब्रज के कई गाँवों में वर्षा बहुत कम हुई और ब्रजवासी वर्षा के अभाव में कृषि कार्य ठीक से न होने पर अत्यधिक दुःखी थे | मानमंदिर के सन्त जब इन गाँवों में गये और ग्रामवासियों से प्रभात फेरी में जाने व नाम-संकीर्तन करने को कहा तो ग्रामवासी क्षुब्ध होकर बोले कि कीर्तन करने से, प्रभातफेरी में जाने से क्या होता है ? जब वर्षा ही नहीं हो रही है, हमारे खेत सूखे पड़े हैं तो हम प्रभातफेरी में क्यों जायें ? सन्तों ने शास्त्रों का प्रमाण बताते हुए उनसे कहा कि प्रभातफेरी में जाने से, नाम-संकीर्तन के प्रभाव से समस्त कार्य सिद्ध होते हैं, वर्षा भी होने लगेगी | पहले आप लोग प्रभातफेरी आरम्भ करें | इस पर ग्रामवासी बोले कि हम नामकीर्तन, प्रभातफेरी का महत्त्व तब समझेंगे जब हमारे गाँवों में वर्षा हो | ब्रजवासियों के ऐसा कहने पर श्रीजी की कृपा से ऐसा चमत्कार हुआ कि मानमन्दिर के सन्तों ने जैसे ही कीर्तन करना शुरू किया, उसी समय बड़े जोर की वर्षा होने लगी और ऐसा सभी गाँवों में हुआ | नाम-संकीर्तन के इस प्रत्यक्ष चमत्कार को देखकर लोग नतमस्तक हो गये और उन्होंने वचन दिया कि अब हम लोग अपने गाँवों में धूमधाम से प्रभातफेरी कार्यक्रम शुरू करेंगे | एक अन्य चमत्कार यह घटित हुआ कि मानमन्दिर के सन्त जिस गाड़ी में बैठकर प्रचार कर रहे थे, अचानक ही रास्ते में एक बड़े ट्रक ने टक्कर दे दी | मानमन्दिर की गाड़ी पर विशाल ट्रक द्वारा यह भीषण आघात था किन्तु कोई दुर्घटना नहीं हुई, मानमन्दिर के सभी सन्त सुरक्षित बच गये, किसी के शरीर पर जरा भी खरोंच तक नहीं आयी | यह नाम-संकीर्तन के प्रचार का एक अभूतपूर्व चमत्कार था | मानमन्दिर के सन्त ऐसे गाँवों में भी गये जहाँ मुसलमानों का बाहुल्य था और हिन्दू ब्रजवासी, मुसलमानों के आतंक से नामसंकीर्तन नहीं कर पाते थे, प्रभातफेरी पूर्णतया बन्द हो चुकी थी परन्तु मानमंदिर के संतों के उपदेश का उन हिन्दू ब्रजवासियों

पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मुस्लिम प्रधान उन गाँवों में सत्तर से अधिक ब्रजवासी धूमधाम से प्रभात फेरी में जाने लगे हैं | जब संतगण प्रचार करके मानमंदिर वापस आये और श्रीबाबामहाराज के पास प्रणाम करने गए और अपने प्रचार अभियान की जानकारी दी तो महाराजश्री इतना अधिक प्रसन्न हुए कि अस्वस्थ होने के बावजूद भी अगले दिन सुबह के सत्संग में वे आये और प्रचार में गए सभी संतों और गुरुकुल के बालकों को अपने हाथों से पटुका पहनाकर सभी का सम्मान किया और सभी प्रचारकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की | पूज्य महाराजश्री ने सत्संग-हॉल में उपस्थित सभी श्रोताओं के समक्ष मानमंदिर के प्रचारकों के सम्मान में ये उद्गार व्यक्त किये – जब ६५-७० वर्ष पूर्व मैं पहली बार ब्रज में आया, उस समय मानमंदिर डाकुओं का अड्डा था | उस समय यहाँ रहते समय मेरे सामने भीषण आपत्तियाँ आयीं, उन समस्त आपदाओं से भगवान् ने रक्षा की | बहुत वर्षों से मानगढ़ उजाड़ (निर्जन) पड़ा था किन्तु राधारानी ने कृपा की तो यहाँ कीर्तन शुरू हुआ | उस कीर्तन में ब्रजवासियों ने सहयोग किया | मानमंदिर के प्रबंधक राधाकान्त (भैयाजी) के पिता श्रीप्रकाशजी ने कीर्तन में बहुत सहयोग दिया था | उन दिनों ये ब्रजवासी दिन में हल के द्वारा कठोर परिश्रम करते हुए कृषि-कार्य करते थे और रात में मानमंदिर आकर कीर्तन किया करते थे | इसके बाद इन लोगों ने धामसेवा आरम्भ की | हम लोग रात १२ बजे तक कीर्तन करने के बाद फावड़ा लेकर गह्वरवन-कुण्ड (राधासरोवर) की सफाई करने जाते थे, उस कुण्ड के शोधन के बाद हमारा साहस बढ़ा और फिर ब्रज के अन्य भी बहुत से कुण्डों का जीर्णोद्धार किया गया | ब्रज की सेवा हेतु बहुत से कार्य किये गए | ब्रज की सेवा हेतु मैंने कई बार कीर्तन-मण्डली बनाई | वस्तुतः ब्रज की सेवा पैसे से नहीं होगी, ब्रज की सेवा तो **हरिनाम** से होगी, **भगवन्नाम** सबसे बड़ा दान है | मानमंदिर के द्वारा पहले भी सम्पूर्ण ब्रजमंडल में हरिनाम प्रचार किया जा चुका है किन्तु समय के फेर से, कलियुग के प्रभाव से कई गाँवों में प्रभात फेरियाँ बंद होने लगीं और कई गाँवों में बहुत थोड़े ही ब्रजवासी प्रभातफेरी में जाते हैं | अतः एक बार पुनः ब्रज के समस्त गाँवों में 'प्रभात फेरी' कार्यक्रम के द्वारा भगवन्नाम प्रचार की आवश्यकता महसूस हुई तो मानमंदिर के संत इस कार्य के लिए तैयार हुए और उन्होंने कई गाँवों में अपना प्रचार अभियान आरम्भ किया | इस बार २० से अधिक संत ५ दिनों में २० गाँवों में हरिनाम प्रचार करके आये और इस तरह इन लोगों ने ऐसा कार्य करके दिखाया, जो आज तक ब्रज में कोई नहीं कर पाया | ब्रज में लगभग १४०० गाँव हैं, यदि इसी गति के साथ मानमंदिर के संत प्रचार करते रहे तो ६५ दिनों में ये सम्पूर्ण ब्रज में प्रचार कर लेंगे | अब हमें आशा बँध गई है किन्तु इसमें कलियुग अपनी टाँग अड़ाएगा | ऐसा भी देखा गया कि भगवन्नाम प्रचार में कभी सम्प्रदायवाद की बाधा आ गई, कभी आपसी फूट हो गई | सबसे बड़ी फूट होती है अहंकार की | प्रचार के समय लोग चाहते हैं कि मैं ही भाषण करूँ, अधिक समय मुझे दिया जाये, किसी अन्य को बोलने का अवसर नहीं मिलता या कम समय मिलता है तो उसे कष्ट होता है; यह सबसे बड़ी बाधा है किन्तु मानमंदिर के संतों ने अत्यंत शांत भाव से, पारस्परिक सौहार्द्र के साथ ४ दिन में ही २० गाँवों में प्रचार करके एक कीर्तिमान स्थापित किया | इस प्रचार में यहाँ के गुरुकुल के बच्चों ने भी सहयोग किया, मानमंदिर में गुरुकुल की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई थी कि यहाँ भक्त बालक तैयार किये जायेंगे, उन्हें निःशुल्क रूप से आध्यात्मिक शिक्षा दी जायेगी और ऐसा ही यहाँ हो रहा है |

तक्षशिला के विश्वविद्यालय में सम्पूर्ण भारतवर्ष से आकर दस हजार बालक निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते थे, उनसे एक पैसा भी नहीं लिया जाता था, प्राचीन भारत में ऐसे विश्वविद्यालय थे; उसी आदर्श को लेकर मानमंदिर में 'दीदीजी गुरुकुल' की स्थापना की गई, इसमें भी विघ्न आया, कई बार गुरुकुल टूटा, इस बार गुरुकुल की

नवीन इमारत का निर्माण किया गया और पुनः यह सुचारू रूप से चल रहा है | अब श्रीजी की ऐसी कृपा हो गई है कि एक श्रेष्ठ भक्त आचार्य श्रीसंजयजी इस नवीन गुरुकुल के संचालक बन गए हैं, ये प्रभातफेरी अभियान में सहयोग देते हैं और गुरुकुल के बालकों को प्रचार में भेजते हैं, ये स्वयं भी बच्चों को लेकर प्रतिदिन बरसाने की प्रभात फेरी में जाते हैं, इनकी अनुमति से बच्चे संतों के साथ प्रचार में गए और इन्होंने बड़ी मेहनत की | (संतजनों व बालकों ने ब्रजवासीजनों की विशेष प्रसन्नकारी सेवा की, वर्षा के अभाव से पीड़ित गाँवों में इनके नृत्य-गान से बड़े जोर की वर्षा हुई) | ऐसा लगता है कि अब गुरुकुल स्थापित करने का हमारा उद्देश्य पूरा हो जायेगा | यही कहने के लिए मैं आप लोगों के सामने उपस्थित हुआ हूँ कि आप लोग यदि कोशिश करेंगे तो १४०० गाँवों में प्रचार करना कोई बहुत कठिन बात नहीं है | आप लोग अवश्य ही इस कार्य को कर लेंगे क्योंकि जब अभी ४ दिन में आप लोगों ने बड़ी शान्ति के साथ २० गाँवों में प्रचार किया है तो १४०० गाँवों में प्रचार कोई कठिन कार्य नहीं है | आपके द्वारा किया गया यह भगवन्नाम का दान सदा याद किया जायेगा | कोई याद करे न करे भगवान् तो इसे अवश्य याद रखेगा | ब्रज में इतनी बड़ी सेवा आज तक नहीं हुई है | यही सोचकर मैं ६५ वर्ष पूर्व अपने घर से चला था जैसा कि श्रीमद्भागवत में कहा गया है –

सत्यां क्षितौ किं कशिपोः प्रयासै-
र्बाहौ स्वसिद्धे ह्युपबर्हणैः किम् |
सत्यञ्जलौ किं पुरुधान्नपात्र्या,
दिग्वल्कलादौ सति किं दुकूलैः ॥

(श्रीमद्भागवतजी २/२/४)

मैंने सोचा था कि ब्रज में जब मैं साधु बनूँगा तो पलंग पर नहीं सोऊँगा | भुजाएँ हैं तो फिर तकिया लगाने की क्या आवश्यकता ?

चीराणि किं पथि न सन्ति दिशन्ति भिक्षां
नैवाङ्घ्रिपाः परभृतः सरितोऽप्यशुष्यन् |
रुद्धा गुहाः किमजितोऽवति नोपसन्नान् कस्माद्
भजन्ति कवयो धनदुर्मदान्धान् ॥

(श्रीमद्भागवतजी २/२/५)

क्या पहनने के लिए रास्ते में फटे हुए कपड़े नहीं मिलेंगे और क्या 'वृक्ष' फल-पल्लवों की भिक्षा नहीं देते हैं | इसी भाव को लेकर मैं अपने घर से ब्रज को चला था और यह गीत गाया करता था –

ईटों का कर सिरौना, मिट्टी का कर बिछौना,
तन खाक में मिलाना, यह कर वतन से निकले |

यह गीत बहुत लम्बा है और चित्रकूट के जंगलों में इसे मैं गाया करता था | केवल यही लक्ष्य था कि साधु बनने के बाद ईंटों के तकिया और मिट्टी के बिस्तर पर सोया करूँगा | पलंग आदि का प्रयोग कभी नहीं करूँगा | अब तो मेरा शरीर रोगग्रस्त है, चलने-फिरने में भी मैं असमर्थ हूँ फिर भी प्रभु कृपा कर रहे हैं | पुनः हमारे यहाँ से ब्रज चौरासी कोस की यात्रा शुरू की गई | एक बार ब्रज में एक ऐसी यात्रा आई जिसमें एक व्यक्ति का शुल्क पचास हजार रुपये था | उस यात्रा में नृत्य करने के लिए 'हेमा मालिनी' को और कथा कहने के लिए एक बहुत प्रसिद्ध संत को आमंत्रित किया गया था | उस समय मैंने विचार किया कि एक गरीब आदमी ब्रजयात्रा करने के लिए पचास हजार रुपये कहाँ से लाएगा ? उसी समय मैंने संकल्प लिया कि अब मानमन्दिर द्वारा निःशुल्क ब्रजयात्रा का शुभारम्भ किया जायेगा और सन् १९८८ में यहाँ से श्रीराधारानी ब्रजयात्रा का पूर्णतया निःशुल्क रूप से संचालन किया गया जबकि हमारे पास एक भी पैसा नहीं था और वर्तमानकाल में १५ हजार यात्री निःशुल्क ब्रजयात्रा का लाभ उठाते हैं | किसी से एक भी पैसा नहीं लिया जाता और इस यात्रा में सब लोग देख सकते हैं कि कितने गरीब यात्री आते हैं | इस ब्रजयात्रा का सफलतापूर्वक निर्वाह करने में सबसे महत्त्वपूर्ण

सहयोग हमारे श्रीराधारसमंदिर के ब्रजवासियों का होता है | ४-५ वर्षों से मुरलिकाजी, पण्डित रामजीलाल शर्मा और राधिकेश जी अमेरिका जा रहे हैं और वहाँ निष्काम भाव से भागवत कथा कहते हैं | वे किसी से एक पैसे की भी याचना नहीं करते हैं फिर भी बिना माँगे ही उन्हें प्रतिवर्ष डेढ़-दो करोड़ रुपये का आर्थिक सहयोग मिलता है और यह सम्पूर्ण धनराशि ये निष्काम ब्रजवासी श्रीराधारानी ब्रजयात्रा के लिए समर्पित कर देते हैं | उन्हीं के परिवार की एक कन्या बालसाध्वी श्रीजी अभी हाल ही में ऑस्ट्रेलिया गयी थी, उसने भी वहाँ निष्काम भाव से भागवत कथा कही और बिना याचना के ही इसे दो-तीन महीने में १७ लाख रुपये मिले और उसने यह सारा धन मानमन्दिर की श्रीमाताजी गौशाला में दान दे दिया, एक पैसा भी अपने घर में नहीं रखा | जब मुरलिका जी की टीम अमेरिका, इंग्लैंड और कनाडा का दौरा कर मानमंदिर वापस आयेगी तो उनका भी यहाँ सम्मान किया जायेगा | हमने आज तक अपने पास एक पैसा भी नहीं रखा फिर भी माताजी गौशाला में ५५ हजार से अधिक गौवंश और श्रीराधारानी ब्रजयात्रा में १५ हजार ब्रजयात्रियों की सेवा सफलतापूर्वक सम्पन्न हो रही है | हमारे यहाँ इस समय १५० साध्वियाँ और १०० से अधिक साधु और गुरुकुल के बालक हैं; सबका निःशुल्क रूप से निर्वाह किया जाता है और इन सबकी सेवा में भी श्रीराधारसमन्दिर के ब्रजवासियों का ही महत्त्वपूर्ण योगदान है, इसलिए उनको भी धन्यवाद देना जरूरी है | अन्त में मैं मानमन्दिर के प्रचारकों से पुनः यही कहूँगा कि ब्रज के १४०० गाँवों में हरिनाम प्रचार करना कोई कठिन कार्य नहीं है | आप लोग यदि संकल्प कर लें तो दो महीने में यह कार्य सम्पन्न कर सकते हैं और आप लोगों से यही प्रार्थना करने मैं आया हूँ तथा आप लोगों को प्रणाम करता हूँ | वस्तुतः प्रणाम तो उसी को करना चाहिए जो समाज में भगवन्नाम का दान करता है और जो धन का संग्रह करता है, उसको मैं प्रणाम नहीं करता हूँ, वह तो भारतवर्ष का एक कलंक है | मैं आप लोगों को प्रणाम करके यही प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग ऐसा दृढ़ संकल्प करो कि हम १४०० गाँवों में अपना प्रचार कार्य सम्पन्न करके ही हटेंगे | क्या आप लोग ऐसा संकल्प करते हैं, बताइये |" श्रीबाबा के इस अनुरोध पर सभी सन्त और गुरुकुल के बालक एक साथ उत्तर देते हैं – "हाँ महाराजजी ! हम लोग १४०० गाँवों में अपना प्रचार कार्य पूर्ण करके ही दम लेंगे |" श्रीबाबा - "आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद |"

मानमन्दिर के संतों द्वारा ब्रज-सीमान्त क्षेत्र में हरिनाम-प्रचार

महाराजश्री के आशीर्वचन के पश्चात् ही मानमन्दिर के संत सीमांत ब्रज में हरिनाम प्रचार हेतु निकल गये | ब्रज बहुत बड़ा है | कुछ लोग केवल चौरासी कोस तक ही ब्रज को सीमित मानते हैं जबकि ब्रज तो चौरासी कोस से भी बहुत अधिक विस्तृत है | चौरासी कोस के आगे के विस्तृत ब्रज को सीमान्त ब्रज कहा जाता है | यहाँ भी भगवान् श्रीकृष्ण की अपने लीला परिकरों के साथ विविध रसमयी लीलाएँ सम्पन्न हुई हैं किन्तु वृन्दावन के संकीर्ण सम्प्रदाय अवलम्बियों ने सीमान्त ब्रज की पूर्णतया उपेक्षा कर दी और उसे ब्रज के बाहर का क्षेत्र बता दिया, जो पूरी तरह अनुचित और शास्त्र के प्रमाण के भी विरुद्ध है | सीमान्त ब्रज की उपेक्षा होने के कारण ही अब वृन्दावन से संचालित होने वाली कोई भी ब्रज-यात्रा सीमान्त ब्रज में नहीं जाती है | सीमान्त ब्रज की इस पूर्ण उपेक्षा को देखते हुए श्रीबाबा महाराज ने कई वर्ष पूर्व सीमान्त ब्रज-परिक्रमा आरम्भ की थी, जिसमें

सीमान्त ब्रज के मेवात इलाके में भी श्रीराधारानी ब्रजयात्रा गयी थी | यद्यपि लोगों ने महाराजश्री से सीमान्त ब्रज के मेवात इलाके में ब्रजयात्रा ले जाने का बहुत विरोध किया किन्तु फिर भी श्रीबाबा महाराज १५ हजार यात्रियों के साथ सीमान्त ब्रज में पहुँचे तो वहाँ के ब्रजवासियों ने यात्रा का अभूतपूर्व स्वागत किया | वे अपने क्षेत्र में ब्रजयात्रा के आगमन से बहुत प्रसन्न थे | सीमान्त ब्रज के कई हिस्सों पर यवन शासनकाल के दौरान मुस्लिम आततायियों ने हमला किया और हिन्दू ब्रजवासियों को जबरन मुसलमान बना दिया | तभी से इस इलाके में मुस्लिमों का बाहुल्य है और यह इलाका मेवात कहलाता है | श्रीबाबा महाराज के द्वारा इस क्षेत्र में ब्रजयात्रा ले जाने से यहाँ के कई गाँवों में प्रभातफेरियाँ चलने लगीं और इस बार अक्टूबर, २०१९ में श्रीराधारानी ब्रजयात्रा इसी सीमान्त ब्रज की परिक्रमा करेगी | इसलिए श्रीबाबामहाराज ने मानमन्दिर के संतों को इसी सीमान्त ब्रज में भगवन्नाम प्रचार करने के लिए भेजा है, जहाँ इस बार 'राधारानी ब्रजयात्रा' जायेगी | पूज्यश्री के आदेश से मानमन्दिर के संत इस बार के प्रचार अभियान में सबसे पहले मेवात क्षेत्र में पहुँचे और उन्होंने पुन्हाना, बिछोर, जुरहरा और आली ब्राह्मण आदि मेवात इलाके में प्रभात फेरी का प्रचार किया | इन इलाकों में जहाँ-जहाँ प्रभातफेरियाँ बंद थीं, वहाँ पुनः प्रभातफेरी को आरम्भ कराया | आली ब्राह्मण गाँव में दुर्वासाजी का कुण्ड है, जिस पर कई वर्षों पूर्व मुसलमानों ने अवैध कब्जा कर लिया था | वहाँ के ब्रजवासी मानमन्दिर में श्रीबाबा महाराज के पास आये और अपनी समस्या सुनाई तथा प्रार्थना की कि 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' को हमारे गाँव में ले चलें | उनके अनुरोध पर श्रीबाबा महाराज ब्रजयात्रा को आली ब्राह्मण गाँव में ले गए, प्रथम बार तो कुछ मुसलमानों ने दुर्वासा कुण्ड के रास्ते से यात्रा को ले जाने से रोक दिया परन्तु दूसरी बार की यात्रा में उन्होंने स्वयं श्रीबाबा से अनुरोध किया कि आप अपनी यात्रा दुर्वासा कुण्ड और हमारे क्षेत्र के बीच से ले जाइये | श्रीबाबा ने इस गाँव के ब्रजवासियों से कहा था कि आप लोग अपने गाँव में धूमधाम से प्रभातफेरी चलाइये | भगवन्नाम-संकीर्तन ही समस्त समस्याओं का एकमात्र हल है | यदि आपलोग प्रभात फेरी नियम से चलाते रहेंगे तो 'दुर्वासा कुण्ड' मुस्लिमों के कब्जे से मुक्त हो जाएगा | यहाँ के ब्रजवासियों ने श्रीबाबा की बात को माना और वे कई वर्षों तक अत्यंत उत्साह से प्रभात फेरी करते रहे | उसका परिणाम यह हुआ कि पिछले वर्ष कोर्ट के द्वारा यहाँ के हिन्दू ब्रजवासियों को दुर्वासा कुण्ड के मामले में विजय हासिल हुई और यह कुण्ड मुसलमानों के कब्जे से मुक्त हो गया है | मानमंदिर के सन्त इस बार जब इस गाँव में प्रचार के लिए पहुँचे तो ग्रामवासियों ने उनका बहुत अधिक स्वागत किया, पहले इस गाँव में दो प्रभात फेरियाँ अलग-अलग इलाकों से चलती थीं | संतों ने अनुरोध किया कि आपलोग अलग-अलग प्रभात फेरी न करके सभी लोग एक साथ प्रभात फेरी करें | ग्रामवासियों ने संतों की इस बात को स्वीकार कर लिया और अब वे एक होकर एक ही प्रभात फेरी चला रहे हैं | जब मानमंदिर के सन्त इस गाँव में पहुँचे तो सारे ग्रामवासी एकत्रित हो गए और पूरा गाँव ही प्रभात फेरी के लिए निकल पड़ा | गाँव के हजारों लोग नाचते-गाते हुए बड़े उत्साह के साथ प्रभात फेरी में शामिल हुए | ग्राम मरोली में काफी समय से वर्षा नहीं हुई थी तो ग्रामवासी बड़े दुःखी थे | मानमंदिर के सन्त जब वहाँ पहुँचे और गुरुकुल के बच्चों ने सावन का रसिया –

"आई घटा कारी-कारी, आओ श्याम मुरारी |" (श्रीबाबा महाराज द्वारा कृत 'रसिया रसेश्वरी' से) गाया तो उसका चमत्कार यह हुआ कि उसी समय आसमान में घनघोर काली घटा छा गयी और बड़े जोर से मूसलाधार बारिश होने लगी | घंटों तक वर्षा होती रही और गाँव के ब्रजवासी तथा मानमंदिर के सन्त रसिया गायन के साथ ही घोर वर्षा में नृत्य करते रहे | इसी प्रकार मेवात क्षेत्र के एक अन्य मुस्लिम प्रधान ग्राम सिंगार में भी मान मंदिर के सन्त पहुँचे | वहाँ पहले श्रीबाबामहाराज की प्रेरणा से जो प्रभात फेरी चलती थी, उसमें मुसलमानों ने विघ्न डाला था, जब हिन्दू लोग प्रभात फेरी लेकर जाते थे तो मुसलमान उनपर पत्थर बरसाते थे, उनको हर तरह से रोकने का प्रयास करते थे | मुस्लिमों के उपद्रव के कारण हिन्दुओं ने यहाँ प्रभात फेरी बंद कर दी थी परन्तु इस बार जब मानमंदिर के सन्त सिंगार में पहुँचे तो उन्होंने यहाँ के हिन्दू ब्रजवासियों को साथ लेकर मुस्लिमों से भरे कस्बे में बाजार के मध्य से होकर धूमधाम से प्रभात फेरी निकाली और उत्साह के साथ कीर्तन किया, रसिया गाया और नृत्य किया | मुसलमानों का विरोध करने का बिल्कुल भी साहस नहीं हो पाया | संतों ने मुस्लिमों से कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म-पालन करने का पूर्ण अधिकार है | जब हिन्दू आपके धर्म के मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं करते हैं तो आपलोग हिन्दुओं के धर्म-पालन में व्यवधान क्यों डालते हैं ? ऐसा न करें और यहाँ के हिन्दुओं को प्रभात फेरी में जाने से मत रोकें | संतों के ऐसा कहने पर मुसलमानों ने आश्वासन दिया कि यहाँ के हिन्दू उत्साह के साथ प्रभात फेरी चलायें, अब हमारी ओर से इसका कोई विरोध नहीं किया जाएगा | इस प्रकार अब हिन्दुओं ने यहाँ पुनः धूमधाम से प्रभात फेरी आरम्भ कर दी है |

.....

'दीदीजी गुरुकुल, मानमंदिर' के बाल-विद्यार्थियों द्वारा 'श्रीहरिनाम-प्रचार' अभियान

संकलनकर्त्री एवं लेखिका –दीदीजी गुरुकुल की छात्रा बालसाध्वी शीतल जी, मानमन्दिर, बरसाना

जब श्री बाबा महाराज ने मानमंदिर के संतों के द्वारा ब्रज के गाँवों में हरिनाम प्रचार करने पर उनका सम्मान किया और १४०० गाँवों में उनसे प्रचार करने का अनुरोध किया तो मानमंदिर गुरुकुल के संचालक आचार्य श्रीसंजयजी ने भी संकल्प लिया कि अब मैं भी गुरुकुल के बालकों को साथ लेकर श्रीबाबा महाराज के उद्देश्य की पूर्ति के लिए ब्रज के गाँवों में हरिनाम प्रचार करूँगा और इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु ३१ जुलाई, २०१९ को वे श्रीबाबामहाराज का आशीर्वाद लेकर ब्रज के गाँवों की ओर चल पड़े | उनके इस शुभ कार्य में सहयोग करने के लिये मानमंदिर के सदस्य और बिहार राज्य के भूतपूर्व डी.जी.पी (डायरेक्टर जनरल ऑफ़ पुलिस) श्री आनन्द शंकर भी उनके साथ गये | ये सभी लोग अपने प्रचार अभियान के लिये सबसे पहले हताना गाँव में पहुँचे और वहीं से अपना प्रचार कार्य निकटवर्ती गाँवों में प्रारम्भ कर दिया | उनके इस कार्य में हताना निवासी ब्रजवासी संत श्रीहरिदासजी ने भी महत्वपूर्ण सहयोग किया और वे ही इन प्रचारकों को हताना के निकटवर्ती गाँवों में ले गये | पहले दिन गुरुकुल के प्रचारकों ने ४ गाँवों में प्रचार किया | दूसरे दौरे में तीन दिनों में इन बच्चों ने

१९ गाँवों में प्रचार किया | इसके बाद गुरुकुल के आचार्य श्रीसंजयजी के नेतृत्त्व में अपने दूसरे दौरे में ये बच्चे शेरगढ़ इलाके में पहुँचे और वहाँ ३ दिनों में इन्होंने ३४ गाँवों में प्रचार किया | इस बार के इनके प्रचार में एक विलक्षण चमत्कार यह देखने को मिला कि एक बहुत विशाल मयूर वहाँ आया और संकीर्तन के साथ अपने पंख खोलकर नृत्य करने लगा | इसके बाद अगले दिन भी जब बच्चे कीर्तन करते हुए जा रहे थे तो वही मयूर पुनः उनके सामने आ गया और कीर्तन के साथ ही पुनः नृत्य करने लगा | यह एक अत्यंत विलक्षण घटना थी | इस बार के दौरे में ये बच्चे बिना विश्राम किये सुबह से शाम तक प्रचार करते थे और भिक्षा माँगकर प्रसाद पाते थे | कठोर परिश्रम करते हुए ये बच्चे एक दिन में ही ११ गाँवों में प्रचार करते हैं | वहाँ से मानमन्दिर आने के बाद अगले दिन ही ये बच्चे फिर से प्रचार करने के लिए गाँवों में निकल गए और गोवर्धन के निकटवर्ती गाँवों में प्रचार किया और इस प्रकार सुबह से शाम तक बिना विश्राम किये ही इन्होंने ऐसा प्रचार किया कि केवल तीन दिनों में ही ३५ गाँवों में प्रचार किया | इस प्रकार मानमंदिर गुरुकुल के बालक अपने आचार्य श्रीसंजयजी के नेतृत्व में ब्रज के गाँवों में अत्यंत उत्साह के साथ हरिनाम प्रचार कर रहे हैं | ये बालक ब्रह्ममुहूर्त में ही उठकर अपनी नित्य क्रिया से निवृत्त होकर वाहन द्वारा ब्रज के गाँवों की ओर चल देते हैं और गाँवों में संकीर्तन करते, नृत्य करते हुये भ्रमण करते हैं तथा फिर स्थान-स्थान पर ब्रजवासियों को शास्त्रों के प्रमाण द्वारा हरिनाम-संकीर्तन की महिमा समझाते हैं एवं ब्रजवासियों से प्रभात फेरी में जाने का अनुरोध करते हैं | उनके इस प्रचार का ब्रजवासियों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ रहा है और जिन गाँवों में प्रभात फेरी बंद हो चुकी थी, अगले दिन से ही ब्रजवासियों ने प्रभात फेरी आरम्भ कर दी | जहाँ कम संख्या में लोग जाते थे, वहाँ अब अधिक संख्या में लोग प्रभात फेरी में जाने लगे हैं | महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत के किसी भी गुरुकुल के छोटे-छोटे बच्चे आज तक कभी हरिनाम का प्रचार करने नहीं गये | यह तो श्रीबाबा महाराज के द्वारा स्थापित गुरुकुल के बालकों का ही परममंगलकारी सेवा-कार्य है, जो निष्काम भाव से कष्ट उठाकर भी इस शुभकार्य में जुट गये हैं | ये बाल प्रचारक देने पर भी कहीं से एक पैसा भी नहीं लेते हैं | भारतवर्ष के इतिहास में गुरुकुल के बच्चों द्वारा निष्काम भाव से देश के गाँवों में प्रचार करना एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है |

.....

बालाराधिकाओं द्वारा श्रीकृष्णनाम का संप्रवाह

संकलनकर्त्री एवं लेखिका – साध्वी ललिता जी, मानमन्दिर, बरसाना

मानमन्दिर के संतों और गुरुकुल के बालकों द्वारा ब्रज के गाँव में प्रचार करने पर श्रीबाबा महाराज ने मानमन्दिर की साध्वियों से भी ब्रज के गाँवों में हरिनाम प्रचार करने का अनुरोध किया | श्रीबाबा के आदेश से मानगढ़ की बाल साध्वियाँ प्रचार के लिए तैयार हो गयीं और वर्तमान में ये दिव्य देवियाँ भी ब्रज के गाँवों में प्रचार कर रही हैं | इनकी टीम में बालसाध्वी मधुवनी, दया, विरागा और श्यामा भी हैं जो श्रीमद्भागवत वक्त्री भी हैं, ये आराधिकाएँ सुबह नौ बजे से ब्रज के गाँवों में 'मानमन्दिर के वाहन' द्वारा प्रचार करने निकलती हैं और रात्रि नौ बजे तक प्रचार करके मानमन्दिर आती हैं | मानमन्दिर के संतों की भाँति ये बाल साध्वियाँ भी गाँव में मधुकरी (भिक्षान्न) माँगती हैं और मधुकरी का ही शुद्ध प्रसाद पाकर निष्काम भाव से

प्रचार करती हैं | एक बार कुछ गाँवों के ब्रजवासियों ने इन बालिकाओं से कहा कि तुम लोग मधुकरी मत माँगो, हम लोग तुमको पैसा दे देंगे | उनकी बात सुनकर परमनिष्किंचन-वृत्ति वाली इन प्रचारिकाओं ने उत्तर दिया कि हम लोग यहाँ पैसा माँगने के लिये नहीं आई हैं, हम लोग तो निष्काम भाव से भगवन्नाम का दान करने के लिए आयी हैं | हम लोग साध्वी हैं और भिक्षा माँगना हमारा धर्म है, इसलिए हम लोग क्षुदा-निवृत्ति के लिए केवल ब्रजवासियों की परमपवित्र रोटी ही ग्रहण करती हैं, इसके अतिरिक्त हमें किसी से कुछ नहीं चाहिए | एक गाँव में जब ये प्रचार के लिए गयीं तो वहाँ कुछ पुरुष एक जगह बैठकर ताश खेलने में व्यस्त थे | ये देवियाँ उस समय भगवन्नाम की महिमा लोगों को समझा रहीं थीं किन्तु ये बहिर्मुखी पुरुषलोग 'हरिनाम-महिमा' को न सुनकर मस्त होकर ताश खलने में लगे रहे | ऐसा देखकर इन बालसाध्वियों ने उन युवकों को बहुत फटकारा और उन्हें ताश खेलना बंद करने के लिए शास्त्र-सिद्धान्तों से कड़े शब्द कहकर 'हरिनाम-कीर्तन' करने का अनुरोध किया | इनकी फटकार का उन युवकजनों पर काफी प्रभाव पड़ा और उसी समय गाँव के अन्य लोग भी वहाँ आ गये तथा बालसाध्वियों का समर्थन करने लगे और जगह-जगह ताश खेले जाने का विरोध करने लगे | आजकल गाँवों में पुरुषों के द्वारा ताश खेलने का व्यसन बहुत अधिक फैल गया है | गाँव की चौपाल पर और अन्य स्थानों पर भी एकत्रित होकर युवा और वृद्ध पुरुष ताश खेलकर अपना अमूल्य मानव-जीवन नष्ट करने में लगे रहते हैं | मानमन्दिर की दिव्य प्रचारिकाएँ अपने प्रचार में शास्त्रों से भगवन्नाम की महिमा बताने के साथ ही ताश-जुआ, शराब और अन्य दुर्व्यसनों को भी त्याग करने का अनुरोध करती हैं | उनके दिव्य उपदेशामृत से ब्रजवासी लाभान्वित हो रहे हैं और ताश-जुआ आदि दुर्व्यसन छोड़ रहे हैं, साथ ही कितने ही गाँवों के लोग भगवन्नाम कीर्तन की फेरी में जाने लगे हैं | मानमन्दिर की ये बालसाध्वियाँ जो प्रभात फेरी के प्रचार हेतु जाती हैं, इन्होंने श्री बाबा महाराज से गीता, भागवत, रामायण और अन्य भक्ति शास्त्रों का विशद अध्ययन किया है | अल्पायु की होते हुए भी इनके मन में कोई सांसारिक आसक्ति नहीं है, इनके मन में किसी प्रकार का लोभ नहीं है | परिवार की ममता तथा धन और अन्य सांसारिक विषयों की आसक्ति का पूर्णतया त्याग कर ये मानमन्दिर पर निवास करती हैं और यहाँ के आराधना भवन रसमंडप की दैनिक नृत्याराधना में भी ये डेढ़ घंटे तक नृत्य करती हैं | इनका सम्पूर्ण जीवन ही त्याग, सेवा और आराधना पर आधारित है | ये बाल आराधिकाएँ केवल ब्रजभूमि की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष की अद्वितीय गरिमामयी विभूति हैं, जो निःस्वार्थभाव से विशुद्ध भक्ति का प्रचार-प्रसार कर रही हैं; इनके इस भक्तिमयी सेवा से भक्त-समाज सदा ऋणी रहेगा |

श्री राधा

आवो श्री ब्रजराज कुमारी ।

अँखियन की पलकन पै आवौ, जोहत अंखिया फारी ॥
मेरे मन मंदिर में आवौ, सूनी जगती सारी ॥
नतमस्तक पर श्री चरनन की रज चाहत दुखियारी ॥
रज की आस परयौ हूँ रज में, हे बरसाने वारी ॥

भक्ति का स्वरूप 'विशुद्ध भावना'

श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'नाम-महिमा' (२४/५/२०१०) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका – बाल व्यासाचार्या साध्वी श्यामा जी, मानमन्दिर, बरसाना

भागवत में अम्बरीषजी के प्रसंग में भगवान् ने दुर्वासाजी से यहाँ तक कहा कि मैं भक्तों के आधीन हूँ, स्वतंत्र नहीं हूँ | भक्तों के भाव-शक्ति की आधीनता बताते हुए भगवान् कहते हैं कि मैं तो बिलकुल उनके वश में होकर नौकर (गुलाम) बन गया हूँ|

अहं भक्तपराधीनो ह्यस्वतन्त्र इव द्विज।
साधुभिर्ग्रस्तहृदयो भक्तैर्भक्तजनप्रियः ॥

(श्रीमद्भागवतजी ९/४/६३)

भक्त वही है जिसके अंदर भाव होता है | भाव वह शक्ति है जो अनंत भगवान् को बाँध देती है | इसीलिए चतुर लोग केवल भाव को पकड़ते हैं, भाव सीखते हैं और हम जैसे मूर्खलोग राग-द्वेष को पकड़ते हैं जबकि वह तो स्वाभाविक रूप से पहले से ही जीव द्वारा पकड़ा-पकड़ाया है | बड़ी जल्दी हम जैसे साधु लोग राग-द्वेष को पकड़ लेते हैं और किसी अन्य साधु से कहते हैं – "देखो, गोपाल दास तुम्हारी बुराई कर रहा था, वह बड़ा दुष्ट है |" अब वह साधु तुरंत ही इस बात को पकड़ लेता है क्योंकि यह अनादिकाल का अभ्यास है, इसे पकड़ने में देर नहीं लगती और भाव सीखना असम्भव है | माला कर लो, जप कर लो, वैराग्य कर लो, भभूत लगा लो, जटा बढ़ा लो, लंगोटी लगा लो, मुंडित बन जाओ, चुन्डित बन जाओ, ये सब करना सरल है किन्तु 'भाव सीखना' असम्भव है | भगवान् ने दुर्वासाजी से कहा कि भक्त मेरे हृदय को ग्रसित कर लेते हैं, भाव ऐसी शक्ति है | यदि भाव शक्ति सीखना हम लोग जान जाएँ तो फिर उसका क्या कहना किन्तु भाव ऐसे ही नहीं आ जायेगा, जब राग-द्वेष रहित हो जाओगे तब भाव की उत्पत्ति होगी | अभी तो थोड़ी-सी ही बात में मुँह फूलता-पिचकता है, अश्रद्धा हो जाती है, खीझने लग जाते हैं, ऐसा नहीं होना चाहिए | जहाँ श्रद्धा है, वहाँ एकरस ज्ञान है और जहाँ श्रद्धा नहीं है वहाँ अज्ञान है चाहे कोई कितना ही बड़ा पंडित क्यों न हो | भगवान् ने गीता में कहा है –

अज्ञश्चश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ॥

(श्रीमद्भगवद्गीताजी- ४/४०)

अश्रद्धा जिसमे है, वह अज्ञ है, मूर्ख है, पढ़ा-लिखा भी बेवकूफ है | पढ़ा-लिखा है चाहे साधु है, विरक्त है, अश्रद्धा होने के कारण वह मूर्ख है | 'अश्रद्धानः' अर्थात् जिसमें भाव नहीं है तो वह अज्ञ (मूर्ख) है, उसका पढ़ना-लिखना, महंत-मण्डलेश्वर आदि बनना सब व्यर्थ है | संशयात्मा विनश्यति- वह तो विनाश को प्राप्त हो गया | अस्तु, प्रसंग यह चल रहा था कि सीताजी सती अनुसुइया जी के पास गयीं और उन्हें प्रणाम करके उनके चरणों में बैठीं | क्यों बैठीं, क्योंकि अनुसुइया जी में भाव शक्ति है, इन्होंने ब्रह्मा, विष्णु और शिव को छोटे बच्चे बना दिया | सीताजी ने सोचा कि इनसे मुझे भाव शक्ति सीखनी चाहिए | देखो, यह बहुत गम्भीर बात है, छोटी बात नहीं है | माता सीता, सती अनुसुइयाजी के पास इसलिए गयीं कि मुझे इनसे भाव शक्ति सीखनी है, इनमें ऐसी कौन-सी विशेषता है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश इनके सामने छोटे बच्चे बन गये | **"अनुसुइया के पद गहि सीता |"** ध्यान दें, कहीं से कुछ सीखना है तो इस तरह सीखना चाहिए, बाप बनके तुम कुछ नहीं सीख सकते | सीताजी जगत्जननी हैं फिर भी उन्होंने अनुसुइयाजी के पास जाकर उनके चरण पकड़े और **"मिली बहोरि सुसील बिनीता ||"** अत्यंत सुशीलता व विनम्रता के साथ उनसे मिलीं | ऋषि पत्नी अनुसुइया जी सीताजी का शील गुण देखकर बहुत सुखी हुईं |

रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई |
आसिष देइ निकट बैठाई ||

(श्रीरामचरितमानस, अरण्यकाण्ड- ५)

कोई भी संत होगा, जब तुम भाव सीखोगे तो वह प्रसन्न

हो जायेगा लेकिन हम लोग अहंता की नकल करते हैं कि वे इतने बड़े महात्मा हैं, उन्होंने इतना बड़ा भंडारा किया और उसमे १०० रुपये दक्षिणा दी तो हम ५०० रुपये देंगे | इस प्रकार हम लोग अहंता-ममता की प्रतिस्पर्धा (होड़) करते हैं, भाव की प्रतिस्पर्धा कोई नहीं करता | हमारे साधु समाज में आजकल भाव का अनुकरण नहीं होता है, अहंता-ममता व ऐश्वर्य का ही अनुकरण चलता है | वृन्दावन के कुम्भ में एक महीने तक हम सबको इसका अनुभव हुआ |

अनुसुइया जी के पास दिव्य वस्त्र और आभूषण थे, उसे उन्होंने आज तक न स्वयं पहना था और न किसी को दिए थे | अब उन्होंने विचार किया कि सीता ही इसकी अधिकारिणी हैं अतः वे दिव्य वस्त्र और आभूषण सीताजी को ही प्रदान कर दिए | इसके बाद वे सीताजी को उपदेश करने लगीं | उन्होंने कहा कि पतिव्रतायें चार प्रकार की होती हैं | इसी प्रकार समझ लेना चाहिए कि भक्तों की निष्ठा भी अनेक प्रकार की होती है | भक्त भी कई प्रकार के होते हैं, निष्ठा के भेद से उनकी अलग-अलग कोटियाँ होती हैं | श्रीमद्भागवत में श्रद्धा-भावना के स्तर से भक्त तीन प्रकार के उत्तम, मध्यम और प्राकृत बताये गये हैं –

सर्वभूतेषु यः पश्येद् भगवद्भावमात्मनः ।
भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः ॥

(श्रीमद्भागवतजी- ११/२/४५)

यह उत्तम भक्त का लक्षण है | –

ईश्वरे तदधीनेषु बालिशेषु द्विषत्सु च ।
प्रेममैत्रीकृपोपेक्षा यः करोति स मध्यमः ॥

(श्रीमद्भागवतजी- ११/२/४६)

यह मध्यम भक्त का लक्षण है | –

अर्चायामेव हरये पूजां यः श्रद्धयेहते ।
न तद्भक्तेषु चान्येषु स भक्तः प्राकृतः स्मृतः ॥

(श्रीमद्भागवतजी- ११/२/४६)

यह प्राकृत अथवा तृतीय कोटि के भक्त का लक्षण है | इस प्रकार श्रद्धा और भावना के अनुसार भक्तों की अलग-अलग कोटियाँ होती हैं | इसी प्रकार पतिव्रता स्त्रियाँ भी चार प्रकार की होती हैं | उत्तम पतिव्रता को तो संसार में कोई दूसरा पुरुष दिखाई ही नहीं देता है | इसी प्रकार उत्तम प्रकृति का भक्त होता है | मध्यम पतिव्रता को पराया पुरुष दिखाई देता है किन्तु उसके प्रति उसका यही भाव रहता है कि यह मेरा भाई है, यह मेरा पिता है | इस प्रकार पर पुरुष के प्रति उसके अंदर पवित्र भाव आ जाते हैं | तीसरी कोटि की पतिव्रता को दूसरे पुरुषों के रूप गुण दिखाई भी पड़ते हैं किन्तु धर्म का विचार करके वह उधर आकृष्ट नहीं होती है | ये क्या है ? ये श्रद्धा के, भावना के स्तर होते हैं | चौथी कोटि की स्त्री वह है जो पर पुरुष के प्रति आकर्षित तो हो जाती है किन्तु कलंक के भय से उससे कोई सम्पर्क नहीं रखती है अथवा उसको परपुरुष से मिलने का अवसर नहीं मिल पाता है अतः उससे दूर रहती है | अब विचार करें कि ये विभाग क्यों किये गये ? विभाग इसलिए किये गये क्योंकि भावना की, श्रद्धा की कोटियाँ हैं | उत्तम और मध्यम पतिव्रताओं की भावना के स्तर पर उनका विभाग किया गया | इसका मतलब यह है कि हर व्यक्ति के अंदर भावनाओं की पर्त अलग-अलग ढंग की होती है, श्रद्धा की पर्त अलग-अलग ढंग की होती है और उस श्रद्धा और भावनाओं की पर्त से उसका मूल्यांकन होता है कि यह उत्तम भक्त है कि मध्यम भक्त है कि प्राकृत है | उम्र के हिसाब से, पढ़ाई-लिखाई के हिसाब से मूल्यांकन नहीं होता है, केवल भावना और श्रद्धा के हिसाब से भक्त का नाप-तौल होता है | वीर बाबा निरक्षर थे किन्तु उनमे कुछ भावना थी और इसीलिए श्रीजी ने उनकी मृत्यु के पश्चात् चमत्कार दिखाया | भावना के लिए पढ़ाई-लिखाई की कोई आवश्यकता नहीं है | हम लोग भी यदि थोड़ी-सी भावना कर लें तो परस्पर का राग-द्वेष समाप्त हो जायेगा | उसी समय दुनिया पूर्णतया बदल जाएगी | इस सन्दर्भ में

श्रीबाबा महाराज अपना अनुभव बताते हुए कहते हैं कि ६५ वर्ष पूर्व जब मैं अपने घर से पहली बार ब्रज में आया तो मेरे मन में यही भाव था कि कि वहाँ की हर गली में श्रीकृष्ण खेलते हैं | उस समय मुझे भिक्षा माँगना भी नहीं आता था | दो-तीन दिन में अथवा २४ घंटे में बिना माँगे जब भी अपने आप भोजन मिलता था तो भाववश मैं यह सोचकर रोने लगता था कि यह भोजन श्रीजी ने दिया है | वह मेरे जीवन का स्वर्ण युग था | एक बार मैं संध्या के समय नंदगाँव में ललिता कुण्ड पर पहुँचा | दिन भर मुझे खाने के लिए कुछ नहीं मिला | कुण्ड के तट पर बैठकर मैं करुण स्वर में **'श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे'** – कीर्तन कर रहा था | दूर कहीं से रात के समय विवाह के गीतों की आवाज आ रही थी | मुझे तो इसके बारे में कुछ पता नहीं था कि विवाह के समय स्त्रियाँ रात भर गीत गाती हैं, जिसे ब्रज में खोइया कहते हैं | मैं तो यही सोचकर भावविभोर हो रहा था कि आह, यह वही ब्रज है जहाँ आज भी गोपियाँ रात भर जागकर कृष्ण के गीत गाती हैं | (जहाँ भाव राशि होती है, वहाँ काम-क्रोध कहाँ आ सकते हैं |) मैंने सोचा कि जिस घर से इस गीत की आवाज आ रही है, मैं वहाँ कैसे पहुंचूँ, वहाँ अवश्य ही श्रीकृष्ण होंगे क्योंकि उन्होंने ही कहा है कि जहां मेरे भक्त मेरा गुणगान करते हैं, मैं वहीं रहता हूँ| अब कैसे उस घर में घुसुं, कौन सा वह घर है, पता नहीं कोई वहाँ घुसने भी देगा कि नहीं, मैं बहुत छटपटा रहा था कि यहाँ अवश्य ही श्यामसुन्दर हैं | यह क्या था, यह भाव था | आधी रात हो गयी लेकिन मुझे बहुत बेचैनी हो रही थी कि देखो, ये गोपियाँ सो नहीं रहीं हैं, सारी रात जाग रही हैं,इनमे कितना अधिक कृष्ण प्रेम है | ललिता कुण्ड के किनारे बैठा हुआ मैं इसी प्रकार भावमग्न होकर कीर्तन कर रहा था और दिन भर कुछ खाया नहीं था | इतने में ही ललिता कुण्ड के दूसरी ओर रहने वाले कुछ बंगाली महात्मा मेरे पास आये और अपनी कुटिया पर ले जाकर उन्होंने मुझे भोजन कराया | भोजन को देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गये और मैं यह सोचकर रोने लगा कि यह भोजन श्रीजी ने भेजा है | भोजन करके मैं अपने स्थान पर लौट आया और ब्रजस्त्रियों के गीत को पुनः सारी रात सुनने लगा और यह सोचा कि सबेरा होने पर मैं जल्दी से भागकर उस घर में जाऊँगा,जहाँ से यह गीत की ध्वनि आ रही है तथा वहाँ श्यामसुन्दर होंगे तो मैं उन्हें पकड़ लूँगा | अब देखिये कि भाव में दुनिया बदल जाती है | सबेरा होते ही मैं अँधेरे में ही दौड़कर नन्दभवन पर चढ़ गया और जिधर से गीत की आवाज आ रही थी, उधर ही देखने लगा | इतने में मन्दिर का पुजारी आया, उसने कहा – "ए बाबाजी ! क्या देख रहा है ?" मैंने कहा – "ये गीत कहाँ गाये जा रहे हैं, मैं वहाँ जाना चाहता हूँ |" वह बहुत जोर से नाराज हुआ और बोला – "मोढ़ा ! तू स्त्रियों के ब्याह के गीत सुनना चाहता है |" उसने मुझे बहुत जोर से फटकारा, उसकी फटकार सुनकर मैं चुप हो गया किन्तु मेरा विश्वास हटा नहीं | उन दिनों नंदगाँव में हैंडपंप नहीं थे | दूर से पानी लाना पड़ता था | एक गोपी परात में जल भरकर उसी को हाथों में लेकर स्नान कर रही थी | उसे देखकर मैंने सोचा – अरे, यह सारी रात श्यामसुंदर के साथ जगी है इसलिए अब देर से स्नान कर रही है | पुजारी ने मुझसे कहा – "अरे बाबाजी ! सारी रात यहीं बैठेगा क्या, कुछ खाए-पिएगा कि नहीं, जा, क्षेत्र से रोटी ले आ |" अब क्षेत्र में मैं गया तो वहाँ रोटी मिल गयी | रोटी देखकर श्रीजी की करुणा विचारके मैं पुनः रोने लगा | इसी प्रकार नंदगाँव में गोपियाँ जल भरने के लिए पनिहारी कुण्ड गीत गाते हुए जाती थीं | तब मैं उनका गीत सुनने के लिए दो-दो किलोमीटर तक उनके पीछे चला जाता था कि यह वही कृष्ण गुणगान हो रहा है | बाद में पता चला के ये कृष्ण के गीत नहीं, ये तो लौकिक गीत, ब्याह आदि के गीत हैं तो सारा भाव समाप्त हो गया | कहने का अभिप्राय यह है कि जब भाव उत्पन्न होता है तो दुनिया बदल जाती है, नेत्र बदल जाते हैं, क्रियाएँ बदल जाती हैं और यदि भाव नहीं है तो सभी साधन शून्य हैं |

गुरु-निष्ठा का सच्चा स्वरूप

ब्रजबालिका मुरलिकाजी की कथा (अमेरिका) से संग्रहीत

संकलनकर्त्री एवं लेखिका – साध्वी अचलप्रेमा जी, मानमन्दिर, बरसाना

श्रीभक्तमालजी में एक विचित्र चरित्र है – एक गुरुजी थे, उनका शिष्य बहुत आज्ञाकारी था; एक बार वह कोई यात्रा करने जा रहा था तो उन्होंने उससे कहा कि तुम यात्रा कर आओ फिर मैं तुमको एक जरूरी बात बताऊँगा | शिष्य बोला – "गुरुजी ! इतनी जरूरी बात है तो अभी बता दीजिये, समय का क्या भरोसा कि भविष्य में क्या होगा ?" गुरुजी बोले – "नहीं-नहीं, भरोसा करो, तुम यात्रा कर आओ तब मैं तुम्हें बताऊँगा |" जब यात्रा करके शिष्य लौटा तब तक गुरुजी धाम को पधार चुके थे | गुरुजी के अन्य शिष्य बहुत रोने लगे | उन शिष्यों को रोते देख यह शिष्य बोला – "अरे, आप लोग ! क्यों रोते हो, गुरुजी कहीं नहीं गए हैं, वे जाने का नाटक कर रहे हैं क्योंकि गुरुजी ने मुझसे कहा था कि तू जब यात्रा से लौटकर आयेगा तो तुझे कुछ जरूरी बातें बताऊँगा और मुझे गुरुजी की बात पर शत-प्रतिशत विश्वास है कि जब तक वे मुझे जरूरी बात नहीं बता देंगे तब तक वे कहीं नहीं जायेंगे, तुम लोग रोओ मत |" अब ये अन्य शिष्यजन तो गुरुजी की अंत्येष्टि की तैयारी कर रहे थे और यह हठी शिष्य उनके पीछे लग गया कि तुम लोग कैसे इनका अंतिम संस्कार करोगे, मैं देखता हूँ | मेरे गुरुजी कहीं नहीं गये हैं, वे तो केवल मरने का नाटक करके पड़े हैं | इस शिष्य की शिष्यता इतनी पक्की थी | आगे यह हुआ कि गुरुजी तो वास्तव में भगवद्धाम चले गये थे किन्तु बाकी शिष्य मान नहीं रहे थे क्योंकि वे आयु में भी बड़े थे और इस निष्ठावान शिष्य की बात मान नहीं रहे थे, कह रहे थे कि मूर्ख कहीं का हटता नहीं है; अरे, मरने का भी कोई नाटक होता है, छोड़ गुरुजी को, उनका अंतिम संस्कार हो जाने दे | ऐसा कहके वे जबरन गुरुजी का अंतिम संस्कार करने के लिए ले जाने लगे तो वह शिष्य आर्त भाव से पुकारा - "हे मेरे पूज्य गुरुदेव ! मुझे पता है कि आप मरने का नाटक कर रहे हो, आप मुझे जो आवश्यक बात बताने वाले थे, अपने शरीर में शीघ्र ही आकर मुझे बताइए |" वह चेला इतना पक्का था कि सातों लोकों का भेदन करके, विरजा नदी को पार करके गुरुजी नित्य गोलोक धाम में जहाँ ठाकुरजी के साथ विराजमान थे, उसकी आवाज वहाँ पहुँच गयी | ठाकुरजी ने गुरुदेव से कहा – "गुरुजी ! आपका चेला बुला रहा है, उसके पास नीचे जाओ, आप तो समय से पहले यहाँ आ गये हो, शीघ्र ही नीचे जाइये |" जब भगवान् ने इस प्रकार उन्हें आज्ञा दी तो गुरुजी बोले – "ठीक है प्रभो ! जब आप मुझे आज्ञा देते हैं तो मैं जाता हूँ, सच में उस शिष्य के साथ मैंने ठीक नहीं किया, मैंने उससे कहा था कि मैं तुम्हें एक आवश्यक बात बताऊँगा |" थोड़ी ही देर में उस शिष्य के शिष्यत्व के प्रभाव से गुरुजी के मृतक देह में एकदम से प्राण का संचार हुआ और गुरु जी उठके बैठ गये | बाकी के चेलों ने तो उनके अंतिम संस्कार के लिए लकड़ियाँ भी इकट्ठा कर ली थीं | अब तो वह शिष्य अति प्रसन्नता के साथ उन शिष्यों (गुरुभाइयों) से बोला – "अरे, भाई ! मेरे जीवित गुरुदेव को जलाने का काम आप लोग कर रहे थे, ये कितना बड़ा पाप कर रहे थे, मैंने कहा था न कि मेरे गुरु जी मरे नहीं हैं, देखो - अब मेरे गुरु जी आ गये हैं |" उस शिष्य ने गुरुदेव से कहा – "गुरुजी ! अब बताइए आप मुझे क्या जरूरी बात बताने वाले थे ?" उस शिष्य से गुरु जी बोले – बेटा ! एक बात मैं तुझे बताने से रह गया, बाकी तो सब पाठ मैंने तुझे पढ़ा दिया, वह बात यह है कि जैसी आदर-बुद्धि तू मुझमें रखता है, ऐसी ही आदर-बुद्धि संसार के सभी संतों में रखना क्योंकि यदि तू केवल मुझमें ही गुरु-बुद्धि रखेगा तो मैं हमेशा तो इस संसार

में रहने वाला हूँ नहीं, कभी न कभी तो मुझे भगवद्धाम जाना ही पड़ेगा और यदि मैं कभी ऊपर पहुँच गया तो फिर तुझे लगने लगेगा कि अब गुरुजी तो ऊपर पहुँच गये, अब जो करना है करो, कौन देखने वाला है ? इसलिए बेटा, मैं तुझे एक बात बताने से रह गया कि जैसा गुरु भाव तू मुझमें कर रहा है, वैसा ही गुरु-भाव संसार में समस्त संतों के प्रति करना ताकि तू सदैव गुरुजनों की छत्रछाया में रहे और तुझे कभी भी 'गुरुतत्त्व' का अभाव न दिखे क्योंकि कबीरदासजी की वाणी है –

गुरु मरे और चेला रोया |
कहैं कबीर दोनों ने खोया ||

अगर गुरुदेव की मृत्यु होने पर चेला रोता है तो इसका मतलब यही है कि गुरु की गुरुता में भी कमी है और चेला के चेलापन में भी कमी है क्योंकि सच्चा गुरु कभी मर नहीं सकता, वह चेले के अंदर कहीं न कहीं गुरुभाव स्थापित करके ही जायेगा कि अब मैं तो इस संसार से जा रहा हूँ किन्तु ये श्रेष्ठ महापुरुष हैं, तुम सदा इनके आश्रय में बने रहना, अपने जीवन में कभी उच्छृंखलता मत आने देना कि अब हमारे सिर से तो गुरुजी का हाथ उठ गया, अब मनमानापन करो, ऐसा नहीं करना | श्रेष्ठ पुरुषों में गुरुता का ही भाव रखना, उनको गुरु ही मानना और जो चेला 'संत मात्र' में गुरु-भाव नहीं कर पाया, उसको गुरुजी की मृत्यु के पश्चात् रोना ही पड़ेगा, इसका मतलब यही हुआ कि वह गुरुजी की शिक्षा को ठीक तरह से ग्रहण नहीं कर पाया | इसीलिए कबीरदासजी ने कहा – "कहें कबीर दोनों ने खोया, गुरु मरे और चेला रोया |" सच्चे गुरु ये दिखाकर जायेंगे कि गुरुतत्त्व कभी मरता नहीं है | सिखाने वाले संसार से कभी नहीं जायेंगे, संसार में अच्छे-अच्छे पथ प्रदर्शक, अच्छे-अच्छे दिशा निर्देशक, अच्छे-अच्छे कर्णधार, अच्छे-अच्छे प्रेरणास्रोत तुम्हें मिलते ही रहेंगे बेटा, कभी भी घबराना मत | जो तुमने मुझे गुरुतत्त्व माना है तो मैं ही किसी न किसी महापुरुष में बैठकर तुम्हें आदेश देता रहूँगा, मैं ही किसी न किसी संत के हृदय में बैठकर तुम्हें आदेश देता रहूँगा; इस प्रकार यह गुरुतत्त्व है | अतः महापुरुषों के आश्रय के बिना, गुरुजनों के आश्रय के बिना, भगवद्भक्तों के आश्रय के बिना न तो भगवन्नाम में प्रीति हो सकती है, न धाम की महिमा को ठीक से जाना जा सकता है और न ही भक्ति को ठीक से जाना जा सकता है | शोभित तिलक भाल माल उर राजे ते, बिना भक्तमाल भक्ति रूप अति दूर है | तऊ दुराराध्य कहो कैसे के आराधि सकै | भक्तों के आश्रय के बिना धाम की भक्ति को जानना, नाम की भक्ति को जानना, भक्तों की भक्ति को जानना अत्यंत कठिन है | ब्रजभूमि के माहात्म्य को विस्तार से प्रकाशित करने वाला जो ग्रन्थ है "रसीली ब्रजयात्रा" इसके कागजों को काला करने का कार्य अवश्य मेरे शरीर द्वारा हुआ है किन्तु इसके प्रकाशन का सर्वप्रमुख श्रेय तो श्रीबाबा महाराज का ही है | हमारे पूज्य सद्गुरुदेव ६५ वर्ष पूर्व १६ वर्ष की अवस्था में ब्रज में आये और आज तक वे अखंड ब्रजवास कर रहे हैं, वे कभी ब्रज के बाहर नहीं गये | ६५ वर्षों में उन्होंने ब्रज में जहाँ-जहाँ भी भ्रमण किया, अच्छे-अच्छे आर्ष ग्रन्थों का आश्रय लिया, उनका अध्ययन किया और पैंसठ वर्षों का जो उनका चिन्तन है, जो उनका अनुसन्धान है, उनकी खोज है, उसे उन्होंने इस ग्रन्थ के रूप में प्रकट किया | इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता अपने आप ही इसलिए पुष्ट है क्योंकि इसमें अपनी ओर से ऐसी कोई बात नहीं कही गयी है कि अपना कोई मत थोपने की बात है अथवा अपनी बात रखने का कोई आग्रह है | यह सम्पूर्ण ग्रन्थ आर्ष वाणियों पर आधारित है, आर्ष ग्रन्थों पर ही आधारित है | यहाँ तक कि इस ग्रन्थ की रुपरेखा जहाँ से शुरू होती है और जहाँ विश्राम लेती है, जैसे इस ग्रन्थ के प्रथम खंड के प्रारम्भ में बताया गया है कि धाम की उपासना कैसे की जाये, धाम वास कैसे किया जाये, धाम वास के क्या नियम हैं, धाम की परिक्रमा क्यों आवश्यक है, उसके क्या लाभ हैं, ये सब बातें ग्रन्थों के आधार पर बहुत प्रामाणिकता से रखी गयी हैं | इस ग्रन्थ में कोई मनगढ़ंत बात नहीं लिखी गयी है, इसलिए ग्रन्थ की प्रामाणिकता अपने आप पुष्ट है |

भागवत में 'श्रीराधा तत्त्व'

व्यासाचार्य संत श्रीभक्तशरणजी महाराज, मानमन्दिर, गह्वरवन, बरसाना

सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय विशदरूप से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थों की महिमा का गान करता है और मोक्ष रूप चतुर्थ पुरुषार्थ का वर्णन करके तो अपनी पूर्णता की अनुभूति कर लेता है, परन्तु श्रीमद्भागवत में प्रोज्झित कैतव (१/१/२) कह करके मोक्ष रूप पुरुषार्थ की अभिलाषा का भी सर्वथा निरसन कर दिया, अतः श्रीधरस्वामीपाद उपरोक्त पद्य की व्याख्या में लिखते है-

"प्रशब्देन मोक्षाभिसन्धिरपि निरस्तः"

(भावार्थदीपिका १/१/२)

फिर अन्य त्रिविध पुरुषार्थों की तो चर्चा ही क्या? एवं पञ्चम पुरुषार्थ विशुद्ध कृष्ण प्रेम का प्रतिपादन किया, यही श्रीमद्भागवत का अद्भुत वैशिष्ट्य है जो कि सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय के शिरोमणि के रूप में एवं श्रीकृष्ण के मूर्त विग्रह के रूप में उन्हें प्रतिष्ठापित करता है, इसका प्रमाण है श्रीवेदव्यास जी महाराज का वह आत्मिक संतोष व पूर्णता की अनुभूति, जो श्रीमद्भागवत की संरचना के उपरान्त ही उन्हें प्राप्त हुई।

अतः भागवत का प्रतिपाद्य विषय है श्रीकृष्णप्रेम और कृष्णप्रेम की अधिष्ठातृ देवी हैं श्रीराधा, तब श्रीराधा तत्व के सन्निवेश के बिना भागवत की पूर्णता कैसे संभव है ? अतः श्रीशुकदेव जी महाराज ने श्रीमद्भागवत में पदे-पदे बड़ी ही गरिमामयी शैली में परन्तु परोक्ष रूप से श्रीजी के स्वरूप (महिमा) का चिन्तन किया है और भागवतोपासक आचार्यों ने अपनी टीकाओं में इस रहस्य को प्रकट किया है एवं परोक्षरूपता अर्थात् स्पष्ट रूप से श्रीराधा नामोच्चारण व श्रीराधा यशोगान न करने के अनेक हेतु भी उपस्थित किये हैं; यथा – (i) श्रीशुकदेव जी का अन्तःकरण अत्यन्त निर्मल है, वे श्रीजी के लालित-पालित शुक हैं एवं श्रीजी के नाम के प्रति उनकी अतिप्रियता है, अतः श्रीराधानामोच्चारण मात्र से श्रीशुक मुनि छः माह की मूर्च्छा को प्राप्त हो जाते हैं -

श्रीराधानाममात्रेण मूर्च्छां षाण्मासिकीं भवेत्।
अतो नोच्चरितं स्पष्टं परीक्षिद्धितकृन्मुनिः॥

इसमें आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि विशुद्ध हृदय में श्रीयुगलनाम अपनी पूर्ण चमत्कारिता प्रकट करता है, उसी कृष्णनाम को एक सामान्य बद्ध जीव सुनता है तो सद्यः कोई विशेष चमत्कारिता नहीं दिखाई देती है, परन्तु उसी कृष्ण नाम को जब एक गोपी सुनती है तो वह नाम के माधुर्य में सब कुछ भूल जाती है –

कृष्णनाम जबते श्रवण सुन्योरी आली,
भूली री भवन हों तो बावरी भई री।
भर भर आवें नयन चितहु न परे चैन,
मुख हु न आवे बैन तनकी दशा कछु ओरें भई री॥
जे तेक नेम धर्म कीनेरी मै बहु विध,
अंग अंग भई हों तो श्रवण मई री।
'नंददास' जाके श्रवण सुने यह गति,
माधुरी मूरति कैधो कैसी दई री॥

ऐसी ही उच्चतम अवस्था है महामुनि की, यदि श्रीराधा नामोच्चारण से गोपी जैसी महादशा को वे भी प्राप्त हो जाते, तो कैसे संपन्न होता साप्ताहिक सत्र? और मध्य में कई बार ऐसा प्रसंग आया है जब लीला स्मरण मात्र से समाधिस्थ हो गए श्रीशुक मुनि; यथा –

इत्थं स्म पृष्टः स तु बादरायणिः तत्स्मारितानन्तहृताखिलेन्द्रियः।
कृच्छ्रात् पुनर्लब्धबहिर्दृशिः शनैः प्रत्याह तं भागवतोत्तमोत्तम॥

(श्रीमद्भागवत १०/१२/४४)

सत्र विरमित होता दिखाई दिया तो वहाँ उपस्थित भक्तों ने पुनः उच्च संकीर्तन के माध्यम से बड़े ही दीर्घ प्रयत्न के पश्चात् उन्हें सचेत किया।

(ii) श्रीशुक श्रीजी से केवल लालित पालित ही नहीं, अपितु पाठित भी हैं, श्रीकृष्णप्रेम की शिक्षा-दीक्षा भी श्रीजी से प्राप्त है उन्हें –

गाढानुराग भर निर्भर भङ्गुराया
कृष्णेति नाम मधुरं मृदु पाठयन्त्याः।

(आनन्दवृन्दावनचम्पू 8/44)

अर्थात् अति प्रेम पुलकित होकर के श्रीजी निरन्तर मधुरातिमधुर श्रीकृष्ण नाम का पाठ पढ़ाती हैं।

अतः आचार्यों ने श्रीशुक उवाच, इस वाक्य का – **'श्रिया पाठितः शुकः श्रीशुकः'** इस प्रकार मध्यम पद लोपी समास करके अर्थ किया है, यथा – **शाकप्रियो पार्थिवः, शाकपार्थिवः, तथैव श्रिया पाठितः शुकः श्रीशुकः** अतः श्री जी के सच्छिष्य हैं श्रीशुक और शास्त्रों में वर्णित है कि –

आत्मनाम गुरोर्नाम नामातिकृपणस्य च।
श्रेयःकामो न गृह्णीयात् ज्येष्ठापत्यकलत्रयोः॥

समर्पित शिष्य को साक्षात् गुरुदेव का नाम नहीं लेना चाहिए क्योंकि महामहिमामय गुरुदेव के नाम की भी एक गरिमा है अतः श्री शुकदेव जी ने मर्यादा की दृष्टि से स्पष्ट नामोच्चारण नहीं किया । (iii) श्रीराधानाम सर्व श्रुतिशास्त्रसार रूप में गृहीत है, सार वस्तु का प्रकाशन सबके सामने सर्वत्र नहीं किया जाता है, अधिकारी के निमित्त ही किया जाता है, जैसे श्रीकृष्ण ने गीता में सर्वगुह्यतम ज्ञान –

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

(श्रीमद्भगवद्गीताजी १८/६६)

अर्जुन को प्रदान किया और सावधान किया,

"इदं ते न तपस्काय" (श्रीमद्भगवद्गीताजी १८/६७)

अर्थात् हे अर्जुन ! अतपस्वी, अभक्त और असूयावान इस ज्ञान के अनधिकारी हैं और

"यः इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधाष्यति"

(श्रीमद्भगवद्गीताजी १८/६८)

अर्थात् मेरे प्रिय भक्त इस गुह्यतम ज्ञान के सर्वथा अधिकारी हैं, उनके समक्ष अवश्य प्रकट करना। अतः यह अधिकारीभेद स्वयं श्रीकृष्ण के द्वारा वर्णित है, इसी प्रकार सार्वजनिक सभा में अधिकारी भेद के कारण श्रीशुक मुनि के द्वारा श्रीराधातत्त्व स्पष्ट वर्णित नहीं है, यद्यपि परीक्षितजी आदि अन्य महर्षि सर्वथा अधिकारी हैं, तथापि कुछ भक्तिशून्य साधनों के आग्रही भी विराजमान थे वहाँ, जिसका संकेत श्रीमद्भागवत में **"संस्थापनाय धर्मस्य"** (श्रीमद्भागवतजी १०/३३/२७) इस श्लोक की टीका में श्रीविश्वनाथचक्रवर्ती आदि आचार्यों ने किया है।

हमारे शास्त्रों में मुख्यतः तीन पक्ष हैं – १. सिद्धांत २. लीला ३. रस। (सिद्धांत में विचार की, लीला में भाव की व रस में प्रेम की प्रधानता है; प्राथमिक अवस्था में व्यक्ति प्रायः मस्तिष्क प्रधान होता है, हर बात को अपने विचार की कसौटी पर कसना चाहता है अतः सिद्धांत पक्ष की बहुलता है शास्त्रों में। यदि स्वमत-पथ स्थापन की तीव्र लालसा नहीं है या किसी भी प्रकार की हठवादिता नहीं है तो विचार की परिणति भाव में और भाव की परिणति प्रेम में हो जाती है, जो कि आध्यात्मिक जगत् की चरम उपलब्धि है । तीव्र प्रतिभावान व्यक्ति के हृदय में सिद्धान्त के रहस्य प्रकट हो जाते हैं, तीव्र भजनपरायण व्यक्ति के हृदय में लीला के रहस्य प्रकट हो जाते हैं एवं किसी दिव्य लीला परिकर युगल रस रसिक समर्थ सद्गुरु के कृपापात्र तीव्र भजनपरायण अधिकारी जनों के हृदय में रसपक्ष के रहस्य प्रकट होने लगते हैं, अतः सिद्धान्त, लीला, रस (विचार, भाव, प्रेम) उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं, दिव्य हैं, सूक्ष्म हैं। अतः भागवत में प्रथम-नवम स्कंध पर्यंत एवं अंत में एकादश-द्वादश स्कंध में विभिन्न आख्यानों के माध्यम से सिद्धांत को प्रस्तुत किया है और मध्य में दशमस्कंध में लीलापक्ष, और लीला पक्ष के मध्य में रस पक्ष (रासपंचाध्यायी) का वर्णन किया गया है, अतः सर्वशास्त्रसार सिद्धांत, सिद्धांत का सार लीला और लीला का सार रस, अर्थात् विचार का सार भाव, भाव का सार प्रेम और प्रेम की भी परम परिणति महाभाव और महाभाव का सार हैं - वृषभानुनंदिनी श्रीराधा –

प्रेमे परमसार महाभाव जान।
सेइ महाभावरूपा राधाठकुरानी॥ (चैतन्यचरितामृत)

अतः निखिललोक चूड़ामणि श्रीकृष्ण भी जिनके चरणों में प्रपन्न होकर गौरवान्वित होते हैं –

श्रीराधिके तव कदा चरणारविन्दं गोविन्दजीवनधनं शिरसा वहामि ॥ (राधासुधानिधि)

अथवा

देहि पदपल्लवमुदारम् **।** (गीतगोविन्द)

ऐसे सर्वशास्त्रसारातिसार श्रीराधातत्त्व के प्रति अतिगौरव बुद्धि होने के कारण श्रीशुकदेव जी ने स्पष्ट उच्चारण नहीं किया, अतः श्रीहरिरामव्यास जी गाते हैं –

परम धन राधा नाम अधार **।**
जाहि श्याम मुरली में टेरत सुमिरत बारंबार ॥
श्रीशुक प्रगट कियौ नहीं तातें, जान सार को सार ॥

(व्यासवाणी)

परन्तु परोक्ष रूप से विस्तार से श्रीजी की लीलाओं (स्वरूप) का चिंतन किया है क्योंकि भागवत पञ्चम पुरुषार्थ विशुद्ध कृष्णप्रेम प्रधान ग्रन्थ है और कृष्णप्रेम (रस) की अधिष्ठातृ देवी हैं श्रीराधारानी अतः उनके बिना भागवत की रसवत्ता व सर्वशास्त्र श्रेष्ठवत्ता सिद्ध नहीं हो सकती है इसलिए भागवतोपासक आचार्यों ने इस रहस्य को प्रकट किया है, यथा-सर्वप्रथम मंगलाचरण में श्रीशुक मुनि ने श्रीजी के गरिमामय स्वरूप का चिन्तन किया है –

नमो नमस्तेऽस्त्वृषभाय सात्वतां
विदूरकाष्ठाय मुहुःकुयोगिनाम् । <u>निरस्तसाम्यातिशयेन</u>
<u>राधसा स्वधामनि ब्रह्मणि रंस्यते नमः ॥</u>

(श्रीमद्भागवत २/४/१४)

इस पद्य की व्याख्या में भागवत के प्रख्यात टीकाकार आचार्य वंशीधर जी लिखते हैं, - **स्वधामनि वृन्दावने राधसा राधया सह रंस्यते क्रीडते कीदृशो स्वधामनि ब्रह्मणि सर्वोत्कृष्टे 'लोकेषु पृथ्वी धन्या तत्र वृन्दावनं महत्' किं भूतेन राधसा निरस्तौ साम्यातिशयौ तौल्याधिक्ये यस्य तेन 'न राधा सदृशी काचिद्देवताभ्यधिका कुतः ।**
अनेककोटिब्रह्माण्डपतिर्यस्या वशे हरिः ॥'
इत्यादिपुराणवत् । सान्तोऽपि राधधातुनिष्पन्नो राधः शब्दो राधावाचकः समानार्थप्रत्ययनिष्पन्नत्वात् ।

(भावार्थदीपिकाप्रकाश)

अर्थात् दिव्य श्रीमद्वृन्दावनधाम में **"निरस्त साम्यातिशय"** – समस्त चिदचित् जगत में कोई भी जिनके सौंदर्य, माधुर्य, लावण्य, वैदग्ध्य, कारुण्य आदि की समता ही नहीं कर सकता फिर अतिशयता तो कैसे संभव है यथा श्रीव्यास जी महाराज लिखते हैं –

राधिका सम नागरी नवीन को प्रवीन सखी,
रूप गुन सुहाग भाग आगरी न नारि ।
वरुन नागओक भूमि देवलोक की कुमारि,
प्यारीजू के रोम ऊपर डारौं सब वारि ॥

ऐसी श्रीराधारानी के साथ लीलापरायण श्रीराधा रमण लाल को प्रणाम | यहाँ राध् आराधने धातु से निष्पन्न राधस् शब्द राधा पद वाचक ही है, समानार्थ प्रत्यय से निष्पन्न होने के कारण |

इसी प्रकार राधाष्टमी पर श्रीजी की प्राकट्य दिवस की लीला का स्मरण किया है यथा –

तत आरभ्य नन्दस्य व्रजः सर्वसमृद्धिमान् ।
हरेर्निवासात्मगुणै <u>रमाक्रीडमभून्नृप</u> ॥

(श्रीमद्भागवत १०/५/१८)

प्रस्तुत पद्य की व्याख्या में आचार्यों ने रमा शब्द का अर्थ श्री राधा किया, क्योंकि ब्रज रस में रमा शब्द का अर्थ लक्ष्मी नहीं है जैसे –

शेष महेष सुरेश न पावै, अज अजहुँ पछिताय ।
सो सुख रमा तनक नही पावत, *जदपि पलोटत पाय* ॥

(नन्ददासजी)

अथवा

नायं श्रियोऽङ्ग उ नितान्तरतेः प्रसादः स्वर्योषितां नलिनगन्धरुचां कुतोऽन्याः । (श्रीमद्भागवत १०/४७/६०)

अथवा

यद्वाञ्छया श्रीर्ललनाऽऽचरत्तपो
विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता ॥

(श्रीमद्भागवत १०/१६/३६)

अतः आचार्यचरण लिखते हैं –

(i) नायं श्रियः इत्याद्युक्तरीत्या वैकुण्ठश्रीतोऽपि व्रजदेवीनामेव परमरमात्वोक्तेस्तासामपि परम रमा श्रीराधा तस्य अपितदानीमाविर्भावात् तस्याश्च क्रीडास्थानं तदारभ्याभूदिति। (भीवार्थदीपिकाप्रकाश)

(ii) श्रीकृष्णजन्मआरभ्य रमाणां श्रीराधादीनां आक्रीडं विहारास्पदमभूत् तज्जन्मानान्तरं तासाञ्च जन्माभूदित्यर्थः। (वैष्णवनन्दिनी)

(iii) ब्रजदेवीनां परं रमा रूपाणां तासामपि परं रमायाः श्रीराधायाश्च तदानीमेवाभिर्भावात् विहारस्थानमपि बभूव। (वैष्णवतोषिणी)

इस प्रकार से श्रीराधारानी की प्राकट्य लीला का चिंतन श्रीशुकदेव जी ने किया है, भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (जन्माष्टमी) में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया और ठीक १५ दिन बाद भाद्रपद शुक्ल अष्टमी (राधाष्टमी) के पावन पर्व पर प्रभात की वेला में श्रीधाम बरसाना में श्रीवृषभानुबाबा के भवन में श्रीकीर्ति मैया के यहाँ श्रीराधारानी का प्राकट्य हुआ, रसिक महापुरुषों ने अपनी वाणियों में गाया –

चलौ वृषभान गोप के द्वार।
जन्म लियौ मोहन हित स्यामा आनन्द निधि सुकुमार॥

(श्रीहित स्फुटवाणी)

आजु बरसानें बजत बधाई।
भाग बड़े कीरति रानी कें ऐसी कन्या जाई॥
दुंदुभि ढोल भेरी सहनाई बाजन बाजत द्वारे।
श्रीवृषभानु राइजू की पौरी धूम मची अति भारे॥
दान देत वृषभानु भाँवते जो जाचत तिहि काल।
'कृष्णदास' सब देत असीसै-चिर जीवौ यह बाल॥

(श्रीकृष्णदासजी)

और सभी ब्रजवासियों ने बड़े ही उत्साह से श्रीजी का जन्मोत्सव मनाया अर्थात् नन्दोत्सव में जो आनंद आया उससे भी द्विगुणित आनंद और रस वर्षण श्रीजी के प्राकट्योत्सव में हुआ –

जो रस नंद भवन में उमग्यो ताते दूनो होत री॥

(श्रीसूरदासजी)

१. इसी प्रकार वेणुगीत में श्रीजी की कैशोर लीला का दर्शन करते हैं श्रीशुकदेव जी -

अक्षण्वतां फलमिदं न परं विदामः सख्यः पशूननु विवेशयतोर्वयस्यैः। वक्त्रं व्रजेशसुतयोरनवेणुजुष्टं यैर्वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम्॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/२१/७)

प्रस्तुत पद्य में व्रजेशसुतयोः इस वाक्य में इतरेतर द्वंद्व समास करके अर्थ करते हैं श्रीनाथचक्रवर्ती जी व्रजेशसुतयोः अर्थात् राधाकृष्णयोः।

श्रीराधायाः सहचर्य एव प्रथममाहुः – हे सख्यः! ब्रजेशसुतयोर्वक्त्रं यैः पीतम् तदेव तेषामक्षिफलम्। व्रजेशश्च व्रजेशश्च व्रजेशौ श्रीकृष्ण-राधा-पितरौ स्थले स्थले दर्शनीयौ तयोः सुतश्च सुता च व्रजेश सुतौ राधाकृष्णौ तयोः व्रजेशसुतयोः राधाकृष्णयोः उभयोः उभयं वक्त्रं यैः पीतम्।

(श्रीनाथचक्रवर्तीपादविरचिता चैतन्यमतमञ्जूषा)

अर्थात् श्रीजी की सहचरियाँ कहती हैं - हे सखियो ! वस्तुतः नेत्रवान् तो वही है जो व्रजेशनंदिनी अर्थात् वृषभानुनंदिनी श्रीराधा और व्रजेशनंदन अर्थात् नन्दनंदन श्रीकृष्ण के असमोर्ध्व सौन्दर्यागार श्रीमुखचन्द्र का अपने नेत्रयुगल से निरन्तर पान करते हैं, श्रीभट्टदेवाचार्य जी की वाणी में –

बसो मेरे नैनन में दोउ चंद।
गौर बरन वृषभान नंदिनी, स्याम वरन नंद नंद।

(युगलशतक)

२. अग्रिम क्रम में मादनाख्य भाव में अवस्थित स्वयं श्रीजी वेणु के सौभाग्य का दर्शन कर सखियों से कहती हैं –

गोप्यः किमाचरदयं कुशलं स्म वेणु-
र्दामोदराधरसुधामपि गोपिकानाम्।

(श्रीमद्भागवतजी १०/२१/९)

अर्थात् हे सखियो ! इस वंशी ने न जाने कौन-सा तीक्ष्ण तप किया है, जिसके फलस्वरूप यह नित्य-निरन्तर हम ब्रजवामाओं के सर्वस्व श्यामसुन्दर की अधरसुधा का पान करती रहती है, यह श्लोक श्रीजी के मुखारविन्द से

प्रकट हुआ है क्योंकि श्रीसनातनगोस्वामीजी परवर्ती पद्य **"वृन्दावनं सखिभुवो"** (श्रीमद्भागवतजी १०/२१/१०) की टीका में लिखते हैं –

हे सखीति कृष्णप्रदत्ततदाधिपत्येन तव तु परमधन्यतैवेति पूर्वश्लोकेन स्वयं वर्णिताद् वेणुभाग्याज्जातशोकां भगवतीं श्रीराधां प्रति ललितादि तदीय सखी वर्गकृत सान्त्वनामिदं ज्ञेयम् ।

(वृहद् वैष्णवतोषिणी)

(३) अग्रिम क्रम में

पूर्णाः पुलिन्द्य उरुगायपदाब्जरागश्रीकुङ्कुमेन दयितास्तनमण्डितेन । (श्रीमद्भागवतजी १०/२१/१७)

प्रस्तुत पद्य में दयिता शब्द वाच्या श्रीराधा ही हैं | श्रीजीव गोस्वामी जी लिखते हैं – **सा च दयिता श्रीपदेनानूदिता तदिदं वर्णयन्तीषु तास्वपि विशिष्टा रुक्मिणी द्वारवत्यां तु राधावृन्दावने वने इति मत्स्याद् प्रसिद्धा श्रीराधैव लभ्यते ।**

(वैष्णवतोषिणी)

दयितायाः श्रीराधायाः स्तनाभ्यां स्तनयोर्वामण्डितेन

(वृहत्क्रमसन्दर्भ)

क्योंकि श्रृंगार रस में दयिता शब्द का प्रयोग अति प्रीति पात्रा के प्रति ही किया जाता है और श्रीजी श्यामसुन्दर की अतिप्रीति पात्रा हैं, स्वयं श्रीकृष्ण श्रीजी के प्रति अपनी इस अतिप्रियता के भाव को प्रकट करते हैं –

त्वमसि मम भूषणं *त्वमसि मम जीवनं*
त्वमसि मम भवजलधरत्नम् ।
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी
तत्र मम हृदयमतियत्नम् । प्रिये चारुशीले० ।

(गीतगोविन्द)

रासपंचाध्यायी के प्रकरण में तो अतिविस्तार से श्रीजी की महिमा का गान किया गया है क्योंकि रासेश्वरी की कृपा से ही रासरस सम्भव है | अतः सर्वप्रथम श्रीकृष्ण रासेश्वरी श्रीराधा की कृपा का आश्रय लेते हैं –

भगवानपि ता रात्रीः शरदोत्फुल्लमल्लिकाः ।
वीक्ष्य रन्तुं मनश्चक्रे योगमायामुपाश्रितः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/२९/१)

अर्थात् सम्पूर्ण षडैश्वर्य संपन्न भगवान् श्रीकृष्ण के मन में जब रास की अभिलाषा जाग्रत हुई तब उन्होंने योगमायामुपाश्रितः – संपूर्ण संयोग श्रृंगार की शोभा की सीमा श्रीराधारानी का आश्रय लिया | आचार्यचरण अर्थ करते हैं –

(i) योगस्य संयोगस्य मायो मानं पर्याप्तिर्यस्यां सा योगमाया श्रीराधा ।

(ii) योगस्य संयोगस्य मा लक्ष्मीः संपत्तिरिति यावत् तां याति प्राप्नोतीति योगमायां श्रीराधैव तां मनसा उपाश्रितः ॥ (वृ.वै.तो.)

(iii) योगमाया राधिका रन्तुमनश्चक्रे यामाश्रितो यदधीनो भगवानपि इति वा । (सुबोधिनी)

(iv) युज्यते इति योगा श्रीराधा तस्याः कृपां उप आधिक्येन आश्रितः ।

रासेश्वरी श्रीराधा का आश्रय ग्रहण कर वेणुवादन किया, वेणु की ध्वनि को सुनकर सभी गोपियाँ आईं, परन्तु श्यामसुन्दर ने देखा अभी रासेश्वरी राधा नहीं आईं अतः उनकी प्रतीक्षा में श्यामसुन्दर के द्वारा गोपियों की प्रीति की परीक्षा और उत्तर के रूप में गोपियों के द्वारा प्रणयगीत का गान किया गया, परीक्षा के व्याज से श्रीजी की प्रतीक्षा कर रहे हैं श्यामसुन्दर; प्रतीक्षित श्यामसुन्दर की दशा का वर्णन जयदेव स्वामी जी ने किया है –

***पतति पतत्रे* विचलति पत्रे शंकितभवदुपयानम् ।**
रचयति शयनं सचकितनयनं पश्यति तव पंथानम् ।
धीर समीरे ०।

सचकित नयनों से श्यामसुन्दर श्रीजी के आगमन पथ को निहार रहे हैं, उसी क्षण श्रीजी निजयूथ के साथ वहाँ आईं और तब श्रीश्यामसुन्दर ने रास प्रारम्भ किया | यह भाव रासप्रबन्ध नामक ग्रन्थ में श्रीप्रबोधानन्द सरस्वती पाद ने प्रस्तुत किया है |

रास आरम्भ हुआ और उसी समय गोपियों के मन में किंचित् सौभगमद जाग्रत हुआ, हम भी श्रीजी के समान हैं अतः उसी प्रकार से श्यामसुन्दर हमें सम्मानित कर रहे हैं (श्रीमद्भागवतजी १०/२९/४७) एवं श्रीराधा के मन

में मान का उदय हुआ; प्रेम की विकसित व संकुचित अवस्था को ही क्रमशः मान व मद कहते हैं –

तासां तत् सौभगमदं वीक्ष्य मानं च केशवः ।
प्रशमाय प्रसादाय तत्रैवान्तरधीयत ॥

(श्रीमद्भागवत १०/२९/४८)

वयं श्रीराधा समा यतोऽस्मानपि तत्सदृशमेव मनुता इत्यतस्तासां सौभगमदं सम्मानविशेषं च श्रीराधायाः मानं च वीक्ष्य – मानं च प्रशमनाय श्रीराधायाः प्रसादाय तत्रैव कृष्णाटते वान्तरधीयत । ताश्चसाः चेत्येकशेषेण तासां व्रजसुन्दरीणां तस्याः वृषभानुकुमार्याश्च क्रमेण तत् तं सौभगमदं मानं च वीक्ष्य ॥ (भावार्थदीपिकाप्रकाश), (सारार्थदर्शिनी)

यहाँ **"तासाम्"** पद में एकशेष करके श्रीराधा और व्रजगोपियाँ दोनों का ही ग्रहण है, अतः श्रीजी के मान के प्रसादन के लिये, गोपियों के मद के प्रशमन के लिये, श्रीजी के सहित अन्तर्हित हो गए श्यामसुंदर, श्रीजीव गोस्वामीजी भी **"अयं वक्ष्यमाणानुसारेण श्रीराधयैव सहान्तर्धानं ज्ञेयम्"** (वैष्णवतोषिणी)

इस प्रकार से व्याख्या करते हैं | विरह व्यथित गोपियों ने वन वनान्तरों में अन्वेषण किया, वृक्ष लता आदि से पूछा, लीलानुकरण किया और तब गोपीवृन्द ने प्यारे श्रीकृष्ण के चरणचिन्हों का दर्शन किया, और आगे चलकर श्रीकृष्ण के साथ मिले हुए किसी व्रजांगना (श्रीराधा) के चरणचिन्हों का भी दर्शन किया –

तैस्तैः पदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ।
वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्यार्ताः समब्रुवन् ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/२६)

यहाँ वधू शब्द का अर्थ आचार्यों ने किया –

(i) वध्वाः श्रीराधायाः तस्याः एव परम सौभाग्यवतीत्वेन स्थापयिष्यमाणित्वात् |

(वैष्णवतोषिणी)

(ii) श्रीयशोदायाः मनोरथविशेषेण वधूरिति कदाचित् तन्मुखोद्गत्या गोकुले वधुत्वेन प्रसिद्धायाः श्रीराधायाः एव तन्नामाग्रहणकारणं लिखितमेव | (वृहद वैष्णवतोषिणी)

अर्थात् यहाँ वधू पद से श्रीराधा ही बोध्या हैं क्योंकि अग्रिम पद्यों में उनका अति सौभाग्यवतीत्व स्थापित है एवं श्रीयशोदा जी के मन में भी बड़ी प्रबल इच्छा है कि श्रीराधा हमारी पुत्रवधू बने और यह बात उनके मुख से गोकुल में कई बार प्रकट भी हुई अतः गोकुल में श्रीकृष्ण वधूत्वेन श्री राधा ही प्रसिद्ध हैं; अन्यच्च ब्रह्मवैवर्त पुराण व गर्ग संहिता आदि के अनुसार भी भांडीरवन में श्रीब्रह्मा जी के द्वारा इन नित्य सिद्ध दम्पत्ति श्री राधामाधव का विधिवत् विवाह सम्पन्न कराया है, अतः ये श्रीकृष्ण की नित्य वधू हैं । इस प्रकार श्यामसुन्दर के साथ मिले हुए श्रीजी के चरणचिन्हों को सुहृद् पक्ष की सखी ललिता विशाखा आदि के द्वारा पहचान लिया गया और मन ही मन वे श्रीजी के सौभाग्य का दर्शन कर प्रहर्षित होती हुई उनकी सराहना करती हैं –

अनयाऽऽराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः ।
यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद् रहः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/२८)

अर्थात् इस आराधिका ने निश्चित ही अपने सच्चे प्रेम से प्रियतम का आराधन किया है, अतः श्यामसुन्दर हमें छोड़कर के इसके साथ अन्तर्हित हो गए | यह आराधिका कोई और नहीं अपितु साक्षात् श्रीराधारानी ही हैं क्योंकि सच्चे प्रेम की परिभाषा श्रीजी ही जानती हैं – **प्रीति की रीति को पैंड़ो ही न्यारो ।**

कै जाने वृषभानुनन्दिनी, कै जाने वह नन्द दुलारो ॥

(श्रीसूरदासजी)

और राधा नाम का कारण भी यहाँ प्रकट हो गया, जो सर्वदा कृष्ण का आराधन करती हैं एवं श्रीकृष्ण सर्वदा जिनसे आराधित हैं –

अनयैव आराधितः आराध्यः वशीकृतः न त्वस्माभिः राधयति आराधयति इति राधा इति नामकारणञ्च दर्शितम् | (वैष्णवतोषिणी), (वृहद्वैष्णवतोषिणी)

अर्थात् जिनकी प्रेममयी आराधना से श्यामसुन्दर सर्वथा जिनके अधीन हैं, वशीकृत हैं, वह हैं राधा ।

***लालन* तेरेई *आधीन* |**

तेरे रस बस श्यामसुंदर वर, जाचत हैं ज्यौं दीन ॥

(श्रीविट्ठलविपुलदेवजी)

यहाँ यद्यपि श्रीशुक मुनि ने बड़ा ही गोपन किया श्री राधा नाम का परन्तु उनके मुख से राधा नाम निकल ही गया – **"राधयतीति राधेति नाम व्यक्तिबभूवेति मुनिप्रयत्नेन तदीय नामाप्यधात् परं किन्तु तदास्यचन्द्रात् स्वयं निरेति स्म कृपा तु तस्याः सौभाग्यं भेर्या इव वादनार्थं"** (भावार्थदीपिकाप्रकाश)

प्रस्तुत पद्य का एक अन्य अर्थ भी किया है आचार्यों ने – **हे अनयाः ! अतिमहीयस्याः तया सह वृथैव साम्याहङ्कारादनीति मत्यः नूनं हरेरियं राधितः राधां इतः प्राप्तः शकन्ध्वादित्वात् पररूपं |**

(सारार्थदर्शिनी), (भावार्थदीपिकाप्रकाश), (अन्वितार्थ प्रकाशिका)

अर्थात् सुहृत् पक्ष की सखियाँ - प्रतिपक्ष की चंद्रावली आदि से कहती हैं कि हे अनयाः ! अर्थात् अति श्रेष्ठा स्वामिनी जी के साथ वृथा साम्य अहंकार रखने वाली अनीतिमती गोपियो देखो, निश्चित ही हरि राधा को प्राप्त हैं।

राधां इतः (प्राप्तः) (इण् गतौ धातु से क्त प्रत्यय करके इतः शब्द बना, गति के चार अर्थ – गमन, ज्ञान, मोक्ष व प्राप्ति तो यहाँ प्राप्ति अर्थ अभीष्ट है,) अतः, राधाम् इतः प्राप्तः अर्थात् राधा को नित्य प्राप्त हैं। द्वितीया तत्पुरुष समास, विभक्ति लोप एवं शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यं इस वार्तिक से पररूप करके राधित शब्द सिद्ध होता है | आगे श्रीशुकदेव जी ने स्कन्धारोहण (१०/३०/३१,३२), पुष्पचयन (१०/३०/३३), वेणीगुम्फन (१०/३०/३४), मानमनावन (१०/३०/३५) आदि लीलाओं का अति रसात्मक और रहस्यात्मक ढंग से वर्णन किया है और इनका आस्वादन विस्तार से रसिक महानुभावों ने अपने वाणी ग्रंथों में किया है।

उपरोक्त लीलाओं के उपरान्त करुणामयी श्रीकिशोरीजी का मन गोपियों की विरह व्यथा का स्मरण कर अतिद्रवित हो गया और उन्होंने सोचा मुझे गोपियों की सहायता करनी चाहिए, श्यामसुन्दर ऐसे गोपियों से नहीं मिलेंगे, मुझे ही मिलाना होगा, इसलिए मैं चलने में कुछ विलम्ब करूँ, मेरे विलंबित होने पर ये भी शनैः शनैः चलेंगे तब तक गोपियाँ आ जायेंगीं –

सा च मेने तदाऽऽत्मानं वरिष्ठं सर्वयोषिताम् |
हित्वा गोपीः कामयाना मामसौ भजते प्रियः ॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/३७)

इस पद्य की व्याख्या श्रीजीव गोस्वामी पाद करते हैं – **सर्वाः मामसौ भजते प्रधानजनस्य नैतदुचितं तर्हि अहमत्रैव बिलम्बयामि यावत् सर्वाः मिलन्ति यद्यहं न चलामि तदा अयमपि न चलिष्यति तावत्ताः अपि सर्वाः मिलिष्यन्ति |** (वृहत्क्रमसन्दर्भ)

अतः श्रीजी ने श्रांता होने का अभिनय किया और कहा कि मैं अब आगे चलने में समर्थ नहीं हूँ, श्यामसुन्दर ने कहा – **एवमुक्तः प्रियामाह स्कन्ध आरुह्यतामिति |**

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/३९)

आप पूर्व की भाँति स्कंधारूढ़ हो जाएँ, जैसे ही श्रीजी स्कन्धारूढ़ होने के लिये उद्यत हुईं वैसे ही श्री जी के मन में प्रेम वैचित्री जन्य विरह व्याप्त हो गया | प्रेम वैचित्री जन्य विरह का तात्पर्य है –

***प्रियस्य सन्निकर्षेऽपि* प्रेमोन्मादभ्रमाद्भवेत् |**
या विश्लेषधियार्तिस्तत्प्रेमवैचित्त्यमुच्यते ॥

(उज्जवलनीलमणि)

प्रेम की अत्यन्त उत्कर्षमयी अवस्था है प्रेमवैचित्री, जिसमें प्रियतम से नित्य संयोग होते हुए भी वियोग-बुद्धि हो जाती है। जैसे सुधानिधिकार ने वर्णन किया है –

अङ्कस्थितेऽपि दयिते किमपि प्रलापं
हा मोहनेति मधुरं विदधत्यकस्मात् |

(श्रीराधासुधानिधि - ४६)

यह प्रेम वैचित्री जन्य विरह केवल श्रीजी में ही घटित होता है क्योंकि श्रीजी प्रेम की सर्वोच्च अवस्था महाभाव स्वरूपा हैं, जैसे ही श्रीजी को प्रेम वैचित्री जन्य विरह व्याप्त हुआ, श्यामसुन्दर वहीं विराजमान होकर श्रीजी को समझाने का प्रयत्न करते हैं, इतने में अन्वेषण करता हुआ गोपियों का एक यूथ वहाँ पहुँचता है और गोपियों

को देखते ही श्यामसुन्दर अन्तर्हित हो जाते हैं। अति विरह की अवस्था में श्रीजी ने श्यामसुन्दर को पुकारा –

हा नाथ रमण प्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज।
दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिम्॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/४०)

गोपियों ने जब श्रीजी के विरह का दर्शन किया तो परम विस्मय को प्राप्त हो गईं। इस लीला का तात्पर्य श्रीविश्वनाथ चक्रवर्ती जी प्रेमसम्पुट नामक ग्रन्थ में वर्णन करते हैं कि श्रृंगार रस के दो पक्ष हैं, सम्प्रलम्भ और विप्रलम्भ; गोपियों के मन में प्रथम सम्प्रलम्भ जन्य श्रृंगार का अभिमान आया, अर्थात् जितना श्यामसुन्दर हमें चाहते हैं उतना किसी को नहीं चाहते हैं, इस अभिमान को दूर करने के लिये श्रीकृष्ण श्रीजी के साथ अन्तर्हित हो जाते हैं। तब गोपियों ने सोचा निश्चित ही श्यामसुन्दर जितना श्रीजी को चाहते हैं उतना किसी को नहीं चाहते। अतः उनके लिये हम सबको त्याग दिया। अब जब दूसरे क्षण गोपियों को वियोग का विरह व्याप्त हुआ तो सोचने लगीं कि जितना हम श्यामसुन्दर से प्रेम करती हैं, उतना कोई नहीं कर सकता, देखो कितना तीव्र विरह व्याप्त है हमारे मन में, यह विप्रलम्भ जन्य अभिमान हुआ, इसकी निवृत्ति के लिये श्यामसुन्दर ने श्री जी के विरह का दर्शन कराया –

वैश्लेषिकज्वरमपारमतुल्यमस्याः
सन्दर्श्य विस्मयमहाब्धिषु मज्जितानाम्।
स्वप्रेमगर्वमपि निर्धुनवान्यथैना-
न्ताभिर्महाधिक तमामनुभावयामि॥ (प्रेमसंपुट- ८४)

जब गोपियों ने देखा –

ददृशुः प्रियविश्लेषमोहितां दुःखितां सखीम्॥

(श्रीमद्भागवतजी १०/३०/४१)

कि श्रीजी श्याम के अन्तर्हित होते ही (एक पग भी नहीं चल पाई और) वहीं मूर्छित हो गईं, तब गोपियों ने सोचा कि देखो, हम तो कम से कम लीलाभिनय या वन-वनान्तर में अन्वेषण तो कर रही हैं, यह तो एक पग भी नहीं चल पायीं, ऐसा तीव्र विरह व्याप्त है इनमें, निश्चित ही जितना श्रीजी श्यामसुन्दर से प्रेम करती हैं उतना कोई भी नहीं कर सकता।

वस्तुतः ये दोनों ही अभिन्न हैं, दोनों ही चकोर और चन्द्रमा हैं | श्रीराधामुखचन्द्र के चकोर हैं श्रीकृष्ण एवं श्रीकृष्णमुखचन्द्र की चकोरी हैं श्रीराधा –

"परस्पर दोउ चकोर दोउ चन्दा |
दोउ चातक दोउ स्वाती, दोउ घन दोउ दामिनी अमंदा ||"

(श्रीभगवद्रसिकजी)

अन्त में श्रीजी के साथ मिलकर गोपी-गीत का गान किया गया, श्यामसुन्दर प्रकट हुए और दिव्य महारास क्रीड़ा सम्पन्न हुई | कथनाशय है कि श्रीमद्भागवत में विपुल रूप से श्रीशुकदेवजी ने श्रीजी के चरित्र का गान किया है क्योंकि प्रेम, रस, माधुर्य का एकमात्र अधिष्ठान हैं श्रीराधा; ऐसे दिव्य श्री राधा तत्त्व के सन्निवेश के बिना श्रीमद्भागवत का प्रोज्झित कैतव रूप परमधर्म व 'रसमालयम्' स्वरूप सिद्ध नहीं हो सकता | उस दिव्यातिदिव्य महामहिमामय श्रीराधालीलासिन्धु का पार प्रातिभ बल (मति) के आधार पर कौन प्राप्त कर सकता है अर्थात् कोई नहीं ....

"क्वासौ राधा निगम पदवी दूरगा ...|"

(श्रीराधासुधानिधि – २६०)

उसी दिव्यलीलासिन्धु के कुछ बिंदु भगवद्स्वरूप आचार्य महापुरुषों की वाणी के आधार पर यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है |

राधाष्टमी (०६ सितम्बर) के शुभ अवसर पर

मान मन्दिर कला अकादमी की प्रस्तुति –

नाटिका - सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र

दिनांक- ०५ सितम्बर २०१९ समय – शाम ७ : ३० बजे से

स्थान - रसमंडप, गह्वरवन, मानपुर, बरसाना

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान द्वारा ब्रज-क्षेत्र में हरिनाम-प्रचार :-

संकलनकर्त्री एवं लेखिका – साध्वी गोपाली जी, मानमन्दिर, बरसाना

साधुओं द्वारा प्रचारित गाँवों की सूची

१. खायरा २. आंजनोख ३. हाथिया ४. पलसो ५. गुरीर ६. नेतवारी ७. वादीपुर ८. कामवन कांमा ९. कलावटा १०. घाटा ११. छोटा घाटा १२. सतवास १३. ऐंचवाड़ा १४. किरावता १५. बोलखेड़ा १६. लेहसर १७. बुड़ाका १८. मातुकी १९. बाड़ २०. कामा (गयाकुंड-गोपीनाथ का नगला) २१. बिलोंद २२. बादली २३. करनौल २४. आसुका २५. कनवाड़ी २६. कुलवाणा २७. भट्टकी २८. नगला चाहरा २९. सहेड़ा ३०. रांकौली (नगला) ३१. नाहरा (यू.पी.) ३२. नाहरा (राजस्थान) ३३. धमारी ३४. सेऊ ३५. परमदरा ३६. सबलाना ३७. खानपुर ३८. पल्ला ३९. बिरार ४०. खूँटपुरी ४१. पसोपा ४२. सोनोखर ४३. सहसन ४४. नीमगाँव ४५. पाली ४६. पाछोल (गुर्जर) ४७. पाछोल (जाट) ४८. मुल्लाका ४९. बड़ी मुरार ५०. छोटी मुरार ५१. पाई ५२. जुरहरा ५३. सोनोखर ५४. मोरोली ५५. भीमागढ़ी ५६. कासरोट ५७. राँफ ५८. इकलहरा ५९. पेलखू ६०. पाडल ६१. गुहाना ६२. बूढ़ेबद्री ६३. पास्ता ६४. नरैना चौथ ६५. खेचरा गुर्जर ६६. बरई ६७. पानहौरी ६८. पूँछरी ६९. रसिया ७०. कंडोला ७१. गंगावक ७२. सुन्दरावली ७३. बेढम ७४. बंधा ७५. नरायना कटता ७६. अड़ावली ७७. अंजारी ७८. श्योरावली ७८. सारई ७९. देवसेरस ८०. मुड़सेरस ८१. मलसराय ८२. नाहरोली ठाकुर ८३. देशवाल ८४. गारोली ८५. ऐंचेरा ८६. जनूथर ८७. शीशवाड़ा ८८. डभाला ८९. बड़ेसरा ९०. भानुपुर ९१. नौंगाँव ९२. आरसी ९३. बरसाना ९४. कठूमर ९५. तसई ९६. चकचेहुआ ९७. पेंड़का ९८. भावली ९९. सरथली १००. सरथला १०१. तुषारी १०२. पवनकुञ्ज, कामा १०३. पुन्हाना १०४. डूडोली १०५. सिहरी १०६. सिंगार १०७. अन्धोप १०८. आली ब्राह्मण १०९. बिछोर ११०. नागल जाट १११. सेवली ११२. मुढ़कटी ११३. मरौली ११४. खामी ११५. लीखी ११६. हसनपुर ११७. महोली ११८. जैदपुरा ११९. मालव (नीचे) १२०. मालव (ऊपर वाला) २२१. मानागढ़ी १२२. बाघई कटेलिया १२३. भूतगढ़ी १२४. बाजना १२५. पारसौली १२६. सलाका १२७. बरोठ १२८. पिथौरा १२९. मीरपुर १३०. ठेनुआ १३१. सुलतानपुर १३२. तेहरा १३३. सुरीर १३४. टेंटीगाँव १३५. हरनौल (हिंडोल) १३६. इरोली गुर्जर १३७. भद्रवन (नगला भूपसिंह) १३८. नगला लोहरे (रामनगर) १३९. छांहरी १४०. भांडीरवन १४१. माँट १४२. बेलवन (जहाँगीरपुर) १४३. पानीगाँव १४४. वृन्दावन १४५. बंदी आनंदी १४६. छौली १४६. मदनपुरा १४७. अलीपुर १४८. पथवारी १४९. लोहागढ़ १५०. वादीपुर १५१. नन्दोला १५२. बझेरा. १५३. सुनहरा १५४. भदाल १५५. बिजवारी १५६. हताना १५७. संकेत १५८. रिठोरा १५९. महराना १६०. ततारपुर १६१. केहरी गढ़ी १६२. नगला सहसू १६३. राया १६४. नागर १६५. बना १६६. हवेली १६७. सियरा १६८. कारव १६९. पचावर १७०. नगला लोका

गुरुकुल के विद्यार्थियों द्वारा प्रचारित गाँवों की सूची

१. हताना २. विजयगढ़ ३. खिरवी ४. बाँसवा ५. बरका ६. बडूकी ७. ऐंच ८. ऐलपाड़ा ९. बुखरारी १०. शेषशायी (बड़ी) ११. शेषशायी नगला १२. खरोट १३. बेड़ा १४. राजीपुर १५. उमरारा १६. होडल (पट्टी गढ़ी) १७. दहगाँव १८. खामी १९. डराना २०. पिंघोर २१. हसनपुर २२. रामगढ़ २३. पेगरता २४. मिलकई २५. बसई २६. जटवारी २७. नगला जटवारी २८. बेहटा २९. जुनसुटी ३०. माधुरीकुंड ३१. सौंसा ३२. शाहपुर ३३. जिखनगाँव ३४. रामनगर ३५. हरिपुरा ३६. भूतपूरा ३७. ऊँचगाँव ३८. बैरका ३९. जचौंदा ४०. सतना ४१. खामनी ४२. दतिया ४३. मोरा ४४. वाटी ४५. फेंचरी ४६. गनेसरा ४७. बाकलपुर ४८. सतोहा ४९. असगरपुर ५०. नौगाँव ५१. उसफार ५२. माना ५३. नगला माना ५४. नवीपुर ५५. बसई ५६. बैरुआ ५७. कंचनपुर ५८. नौहा ५९. तोष ६०. खुशीपुरा ६१. जुल्हेंदी ६२. बसई ६३. मुखराई ६४. बढ़ौता ६५. भगौसा ६६. भैंसा ६७. छड़गाँव ६८. बाद ६९. गिरिराज वाटिका (काँलौनी) ७०. नगला ७१. रिफ़ाइनरी-९ ७२. बरारी ७३. घाना ७४. बामौली ७५. बेरी ७६. घेड़िया ७७. पीलुआ ७८. तेजाघाना ७९. कोयला ८०. बड़ा कोयला ८१. गौशाला ८२. करनाल ८३. लाड़पुर ८४. नगला पोंहपी ८५. नगला जाम्हू ८६. धीमरी ८७. नगला चन्द्रभान ८८. बेहटा ८९. गुलालपुर ९०. शेरगढ़ ९१. पीरपुर ९२. भीमागढ़ी ९३. कजरौठ ९४. नगला भारी ९५. ऐंचा दाऊजी ९६. नगला प्रतापगढ़ ९७. नगला धनपाल ९८. स्यारहा (चीरघाट) ९९. दलौता १००. जाबली १०१. चौमुहा १०२. शैदपुर १०३. नगला होदो १०४. बिलोड़ा १०५. सेंधवा १०६. नगला रामू १०७. लाड़पुर १०८. धनौता १०९. पुलवाना ११०. पाखरपुर १११. पासौली ११२. पिलखुआ ११३. खादर रामपुर ११४. रिठौरा ११५. सांचौली ११६. साहपुर ११७. अजीजपुर ११८. तारौली ११९. ऊझानी १२०. अलवाई १२१. बिलोंदा १२२. दरावली १२३. लोधौली १२४. गरही १२५. छाता देहात १२६. चंदौली १२७. गोराही १२८. कोटवन १२९. सुजावली १३०. सिहाना १३१. नगरिया

बालसाध्वियों द्वारा प्रचारित गाँवों की सूची

१. ततारपुर २. भरनाकलाँ ३. देवपुरा ४. डिरावली ५. सहार ६. साँखी ७. अरवाई ८. रनवारी ९. नगला बिरजा १०. बझेरा ११. सिवाल १२. भरना खुर्द १३. पेलखू १४. नगला नेता १५. भदाल १६. पाली १७. पाडल १८. कुंजेरा १९. कोन्हई २०. बढ़ौता २१. मलसराय २२. रहेड़ा २३. रतानपुर २४. सैमरी २५. बिलोठी २६. मड़ोई २७. डाहरौली २८. सीह २९. मुड़सेरस ३०. देवसेरस ३१. सकरवा ३२. बसौटी ३३. जुल्हैंदी ३४. डोकरी का नगला ३५. बाटी (बहुलावन)

☀ भगवान् की करुणा की अनुभूति ☀

भोगों से ऊपर उठने के बाद ही भगवान् की करुणा की अनुभूति होती है। हमारा ये मन उछल कूद बंद नहीं करता है। ये मन ही हमें मारता है। ये मन ही हमारा मित्र है और ये मन ही हमारा शत्रु है। दुनियाँ में कोई और बैरी नहीं है। बैरी है अपना मन; जो भगवान् की ओर नहीं चलता है। लेकिन इस बैरी से हम प्यार करते हैं, इसकी ही बात मानते हैं, हम इसके गुलाम हो गये हैं और इसी कारण हमारा नाश हो रहा है। हम अपना गला खुद काट रहे हैं।